bdkbl 24 jkr chrus rd ¼ekgu jkd'k½ % okpu vkj fo'y"k.k

bdkbl dh :ijs[kk

24.0 उद्देश्य
24.1 प्रस्तावना
24.2 रेडियो नाटक का वाचन : रात बीतने तक
24.3 रेडियो नाटक का सार
24.4 सप्रसंग व्याख्या
24.5 कथावस्तु
24.6 चरित्र-चित्रण
  24.6.2 सुन्दरी
  24.6.2 नंद
24.7 परिवेश
24.8 संरचना-शिल्प
24.9 रेडियो-प्रस्तुति/अभिनेयता
24.10 मूल्यांकन
24.11 सारांश
24.12 शब्दावली
24.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

24-0 mÌs';

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मोहन राकेश के विषय में जानकारी दे सकेंगे;
- बता सकेंगे कि 'रात बीतने तक' रेडियो नाटक क्या कहता है;
- इसमें प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ बता सकेंगे;
- इसके महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या कर सकेंगे;
- इसकी कथावस्तु का विश्लेषण और पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सकेंगे;
- इसके परिवेश और संरचना-शिल्प की विशेषताएँ बतला सकेंगे; और
- इस रेडियो नाटक के प्रतिपाद्य का विश्लेषण करके इसके शीर्षक की उपयुक्तता का निर्णय कर सकेंगे।

24-1 iLrkouk

इस खंड की पिछली इकाइयों में आपने 'कौमुद्री महोत्सव' और 'रीढ़ की हड्डी' नामक दो एकांकी तथा 'सबसे सस्ता गोश्त' नामक नुक्कड़ नाटक पढ़ा है। इस इकाई में आप एक रेडियो नाटक पढ़ेंगे। इकाई 18 में आपने पढ़ा है कि रेडियो नाटक क्या है, इसकी क्या विशेषताएँ हैं। 'रात बीतने तक' रेडियो नाटक के लेखक मोहन राकेश हैं। मोहन राकेश स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक में एक अविस्मरणीय नाम है। उनका जन्म 8 जनवरी, 1925 को अमृतसर में हुआ था। वह संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी के बहुत अच्छे जानकार थे। उन्होंने संस्कृत में शास्त्री, अंग्रेजी में बी.ए. तथा संस्कृत और हिंदी में एम.ए. की उपाधियाँ प्राप्त कीं और अध्यापन, पत्रकारिता तथा स्वतंत्र लेखन कार्य किया। वह अत्यंत प्रतिभा-संपन्न और स्वतंत्र व्यक्तित्व के थे। उन्होंने लाहौर, मुम्बई, शिमला, जालंधर और दिल्ली में नौकरी की। उनकी मृत्यु 3 दिसंबर, 1972 को दिल्ली में हुई।

मोहन राकेश ने हिंदी गद्य की सभी विधाओं को अपनी असाधारण प्रतिभा से समृद्ध किया। नाटक, एकांकी, रेडियो नाटक, कहानी, उपन्यास, डायरी तथा विचार और चिंतनपरक गद्य उन्होंने हिंदी को दिया। नाटक के लिए उन्हें विशेष ख्याति मिली। इस संदर्भ में सुप्रसिद्ध नाट्य आलोचक नेमिचंद्र जैन का कथन उल्लेखनीय है, ''हिंदी नाटक के क्षितिज पर मोहन राकेश का उदय उस समय हुआ जब स्वाधीनता के बाद पचास के दशक में सांस्कृतिक पुनर्जागरण

का ज्वार देश में जीवन के हर क्षेत्र को स्पंदित कर रहा था। उनके नाटकों ने न सिर्फ हिंदी नाटक का आस्वाद, तेवर और स्तर ही बदल दिया, बल्कि हिंदी रंगमंच की दिशा को भी प्रभावित किया। उनके पहले, भारतेंदु हरिश्चंद्र और जयशंकर प्रसाद जैसे रचनाकारों के बावजूद ज्यादातर हिंदी नाटक या तो सस्ते मनोरंजन का साधन बना हुआ था या फिर पाठ्य पुस्तकों की दीवारों के पीछे बंद था। पचास के दशक में उसे धीरे-धीरे एक अत्यंत ही समर्थ किंतु जटिल और परिश्रम तथा प्रशिक्षण साध्य कला माध्यम के रूप में स्वीकृति मिलना शुरू हुआ और साथ ही नाट्यकर्मियों से भी अधिक जागरूकता, संवेदनशीलता और कलात्मक गम्भीरता की अपेक्षा होने लगी।'' ('मोहन राकेश के संपूर्ण नाटक')।

मोहन राकेश ने कुल चार नाटक लिखे हैं 'आषाढ़ का एक दिन (1956)', 'लहरों के राजहंस (1963)', 'आधे-अधूरे (1969)', 'पैर तले की ज़मीन'। 'आषाढ़ का एक दिन' के लिए राकेश को 1958 में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा सर्वश्रेष्ठ नाटक के रूप में पुरस्कृत किया गया। यह हिंदी नाट्य जगत की एक युगान्तरकारी घटना थी। राकेश के शेष दो नाटकों& लहरों का राजहंस' और 'आधे अधूरे' को भी हिंदी पाठकों, दर्शकों, नाट्यकर्मियों से अभूतपूर्व सम्मान प्राप्त हुआ। इन नाटकों के कई भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेजी में अनुवाद हुए। इनकी अनेक-अनेक प्रस्तुतियाँ हुईं और आज भी होती हैं। उनके एकांकी तथा अन्य नाटकों को भी पर्याप्त प्रसिद्धि मिली। कहानीकार के रूप में भी मोहन राकेश ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी 'मलबे का मालिक' और 'मिस पाल' जैसी कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध हुईं।

'रात बीतने तक' शीर्षक प्रस्तुत रेडियो नाटक अपने प्रारंभिक रूप में एक कहानी थी जो राकेश ने सन् छियालीस-सैंतालीस में लिखी थी। बाद में सैंतालीस से उनचास के बीच जब वह बम्बई में थे तब उन्होंने इसे 'सुन्दरी' शीर्षक से रेडियो नाटक के रूप में लिखा।

बम्बई रेडियो पर जब इसका प्रसारण हुआ तब राकेश बहुत प्रसन्न नहीं हो सके थे क्योंकि एक ईरानी होटल में चाय पीते हुए शोरगुल के बीच उन्होंने इसे सुना था और नाटक कम 'ध्वनि प्रभाव' ही ज्यादा सुन सके थे।

सात-आठ साल बाद जब राकेश जालंधर में रहते थे तब जालंधर रेडियो के लिए उन्होंने कई नाटक लिखे और रेडियो नाटक निर्देशक रमेश पाल के आग्रह से इस नाटक को भी 'रात बीतने तक' शीर्षक से पुनः लिख डाला। राकेश का मानना है कि परिकल्पना इस बार रंग-नाटक (मंच पर प्रस्तुति के लिए नाटक) लिखने की थी, परंतु रेडियो शिल्प की दृष्टि से अपेक्षित परिवर्तन कर दिये थे। मोहन राकेश के अनुसार ''नाटक के प्रसारण से पहले रमेश पाल के मन में जितना उत्साह था, वह प्रसारण के बाद और बढ़ गया। यहाँ तक कि जालन्धर से जाने के बाद भी उसने राँची, लखनऊ तथा अन्य स्टेशनों से कई बार इसे प्रस्तुत किया।'' आगे चलकर इसी कथ्य को और विस्तृत और संशोधित करते हुए मोहन राकेश ने 'लहरों के राजहंस' नाटक लिखा जो 1963 में प्रकाशित हुआ।

24-2 jfM;k ukVd dk okpu % jkr chru rd

ep

फूलों और दीप-पंक्तियों से सज़ा हुआ i:dk"B।

पीछे की ओर प्रकोष्ठ से सजा हुआ vfyUn है। वही बाहर जाने का मार्ग भी है।

बायीं ओर एक or{ykdkj xok{k है और दायीं ओर एक द्वार जो vH;Urj भाग में जाने के लिए है।

गवाक्ष से कुछ हटकर एक दूधिया vkLrj.k बिछा है। जिस पर फूलों की पंखड़ियाँ बिखरायी गयी हैं।

आस्तरण के दोनों ओर lqjfHk-nO; जलाये गये हैं जिनका /ke प्रकोष्ठ में व्याप्त हो रहा है।[2]

आस्तरण पर कई एक स्वर्णतारों से मंडित mi/kku रखे हैं।

समय

वसन्त की एक रात्रि से लेकर ...।

¼lUnjh vfyn l i:dk"B e vkrh gA vydk mldi ihN-ihN gA½

प्रकोष्ठःभवन या महल के मुख्य द्वार के पास का कमरा; अलिंदःबाहरी द्वार के सामने का चबूतरा या छज्जा; वर्तुलाकारःगोल; गवाक्षःछोटी खिड़की, झरोखा; अभ्यंतरःभीतर, अंदर; आस्तरणःबिछौना, दरी आदि; सुरभि-द्रव्यःसुगंधित पदार्थ; धूमःधुँआ; उपधानःतकिया।

lUnjh % ¼glrh gbZ½ fuokZ.k, मोक्ष और अमरत्व... बस इतना ही? और भी तो बता, अलका, कि नदी-तट से क्या-क्या उपदेश सुनकर आयी है?

vydk % यह हँसने की बात नहीं है, राजकुमारी! आप स्वयं चलकर उनके मुँह से सब सुनें तो...!

lUnjh % तो मुझे वहाँ भी हँसी आये बिना न रहेगी। मनुष्य कितने सुंदर शब्दों की खाल में अपने अभावों को ढकने का प्रयत्न करता है! और तेरे जैसे भोले लोग, अलका, हर शब्द पर विश्वास कर लेते हैं।

vydk % मैं भोली सही, राजकुमारी! पर कपिलवस्तु के सब लोग तो भोले नहीं!

lUnjh % भोले नहीं तो वे पागल हैं। वे स्वयं सोचना नहीं जानते।

vydk % आपने प्रजा के बच्चे-बूढ़ों का उत्साह नहीं देखा, राजकुमारी! वे गौतम बुद्ध के उपदेश सुनने के लिए इस तरह उमड़ पड़ते हैं जैसे कोई निधि प्राप्त करने जा रहे हों।

lUnjh % उसका कारण मैं जानती हूँ। अलका, बहुत दिन एकतार जीवन बिता कर लोग अपने-आप से ऊब जाते हैं। तब उन्हें जहाँ भी कुछ नवीनता दिखायी दे, वे उसके प्रति उत्साहित हो उठते हैं। यह उत्साह तो दूधफेन का उबाल है। चार दिन रहेगा, फिर शांत हो जायेगा।

vydk % परन्तु, राजकुमारी!

lUnjh % ठहर, अलका! एक बात पूछूँ। तू निर्वाण के उपदेश से बहुत प्रभावित हुई है न?

vydk % मैं कितना प्रभावित हुई हूँ, यह आप जानती ही हैं।

lUnjh % अच्छा बता, तू रात को आकाश में खिली हुई तारिकाओं को देखती है?

vydk % मैं आपका अभिप्राय नहीं समझी।

lUnjh % तू बता, तू उन्हें देखती है न?

vydk % उन्हें कौन नहीं देखता?

lUnjh % तारिकाओं की छाया में तू कभी नलिन-सरोवर के पास गयी है?

vydk % कितनी ही बार आप मुझे साथ ले गयी हैं।

lUnjh % तो आज तू अकेली वहाँ जा। नलिन-सरोवर में तैरते हुए हंसों के जोड़ों को देखा है न? आज तू जाकर उनसे यह निर्वाण और अमरत्व की बात कहना। वे चोंच से चोंच मिलाकर चकित दृष्टि से तेरी ओर देखेंगे। तू जाकर फिर उनका यह मौन उत्तर गौतम बुद्ध को सुना देना। (हँसती है।)

vydk % धृष्टता क्षमा हो, राजकुमारी! गौतम बुद्ध इस तरह हँसी के पात्र नहीं। उन्होंने कामदेव को परास्त किया है—उस कामदेव को जिससे बड़े-बड़े देवताओं को हार माननी पड़ी।

lUnjh % उन्होंने कामदेव को परास्त किया है? ¼glrh gqbZ fQj xEHkhj gksdj½ यह झूठ है, अलका! कोरा झूठ है। वास्तव में गौतम बुद्ध को गौतम बुद्ध बनाने का श्रेय यशोधरा को है।

vydk % देवी यशोधरा को?

lUnjh % हाँ-हाँ, देवी यशोधरा को ही। जानती हो किस तरह? उसके नारीत्व में इतना आकर्षण नहीं था कि वह राजकुमार सिद्धार्थ को अपने पास बाँधकर रख सकती। यदि यशोधरा न होकर, सुन्दरी होती...!

vydk % ¼lgl pkSd [kdj½ राजकुमारी! आपके कहने का अभिप्राय है कि····।

lUnjh % कह, रुक क्यों गयी?... मैंने कहा न, तू अभी बहुत भोली है, अलका! नारी का आकर्षण क्या कर सकता है, यह तू नहीं समझ सकती। यशोधरा भी नहीं समझ सकी। ज्वाला क्या कर सकती है, यह या ज्वाला जानती है, या वह काठ जो उसमें जलता है। तू यह कैसे जान सकती है, भोली अलका, तू जो इतनी अनजान है? जा, मेरे लिए शृंगार का सामान ला। आज dkekRlo की रात है। सुनन्दा और विशाखा से कह कि सारे वातावरण में सुरभि धूम फैला दें। फूलों की पत्तियाँ बिछाकर शय्या की रचना कर। सब गवाक्षों को चन्दन-तेल के दीपों से आलोकित कर दे। ... और सुन, चन्द्रिका को संदेश भेज दे कि आज उसे

निर्वाणःमुक्ति, परमगति; कामोत्सव—कामदेव का उत्सव।

fgUnh ,dkadh vkSj vU; n`'; fo/kk,¡

सारी रात नृत्य करना होगा। नृत्य और गीत की ध्वनियों से आज इस वासन्ती रात का शृंगार होगा।... इन भिक्षुओं ने तो वासन्ती रातों का सुहाग ही छीन लिया है। जा!

vydk % जो आज्ञा, राजकुमारी!

¼inkZ mBus ls igys uR; dk 'kCn lquk;h nsus yxrk gSA inkZ /khjs&/khjs mBrk gSA jktdekj uUn ,d mPp/kklu dk lgkjs yVk gSA nklh ik= mPp/kklu og ckgk es fy, gSA lqUnjh ikl cBh efnjkik= ls p"kd es efnjk Mky jgh gSA pfndk ukp jgh gSA uUn p"kd lqUnjh dk gkFk ls ys yrk gSA mldk Loj efnjk ls iHkkfor gS½

uUn % सुन्दरी!

lqUnjh % राजा!

uUn % तुम्हारे मुख से हर बार यह शब्द नया-सा सुनायी देता है। फिर कहो।

¼lqUnjh foykliw.kZ nf"V ls mlls n[krh gS½[3]

lqUnjh % राजा!

uUn % फिर कहो।

lqUnjh % कितनी बार कहूँ?

uUn % कहती रहो—जितनी देर रात है, जितनी देर नृत्य चलता है, जितनी देर मदिरापात्र में मदिरा ढलती है····।

lqUnjh % और उसके बाद····?

uUn % उसके बाद भी। ¼gkFkks dh vxqfy;ka [kksyrk vkSj cUn djrk gS½ जब तक प्राणों में LiUnu है, शरीर में हिलोर उठ सकती है और जीवन को यह उफनता हुआ सागर घेरे है।

lqUnjh % और उसके बाद····?

¼uUn p"kd eqg ls yxkdj ,d lkal esa ih tkrk gSA fQj p"kd Qsd nsrk gS½

uUn % उसके बाद भी। जब तुम यह कहती हो, रातों में वासन्ती हवा ढल जाती है, फूलों की पंखड़ियाँ खुलने के लिए छटपटाने लगती हैं। तुम और····।

lqUnjh % बस-बस, और रहने दो····।

uUn % क्यों? यह वासन्ती हवा, रात्रि का दूसरा पहर, मदिरा का उन्माद और तुम्हारा स्पर्श—तुम चाहती हो कि मैं मौन रहूँ। जीवन में इससे सुंदर क्षण भी होते हैं? तुम्हारे हाथ कहाँ हैं?

lqUnjh % अपने हाथों में देखिए क्या है।

uUn % अरे! ये तुम्हारे हाथ हैं! मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरी अँगुलियाँ मुँदे हुए कमलों से खेल रही हैं। परंतु तुम और पास आओ···· और!

lqUnjh % नहीं, और पास नहीं।

uUn % क्यों? प्रेम करना पाप नहीं है। पाप है? बताओ, पाप है? यदि वह पाप है तो हवा का स्पर्श ऐसा क्यों है? तुम ऐसी क्यों हो? रात ऐसी क्यों है?

lqUnjh % यह अपने हृदय से पूछिए न!

uUn % तो हृदय से पूछकर ही कहता हूँ कि और पास आओ।

lqUnjh % नहीं। संसार की दृष्टि इसे सहन नहीं करती। लोग पहले ही कहते हैं कि राजकुमार नन्द ने मानवी से नहीं, एक ;f{k.kh से विवाह किया है, जो हर क्षण उन पर जादू किये रहती है।

uUn % ठीक ही तो कहते हैं।

lqUnjh % (Ñf=e रोष के साथ) ठीक कहते हैं? मैं यक्षिणी हूँ?

uUn % सच कहूँ?

lqUnjh % हाँ-हाँ!

uUn % मैंने कभी यक्षिणी देखी नहीं। परंतु इतना कह सकता हूँ कि तुम मानवी नहीं। तुम्हारे जैसा रूप मानवी का नहीं होता।···· तुम्हारी आँखों से मदिरा छलकती

स्पंदनःगति, धड़कन; यक्षिणीःयक्ष एक देवयोनि है। यक्ष की स्त्री को यक्षिणी कहते हैं, दुर्गा की एक अनुचरी भी यक्षिणी है; कृत्रिमःनकली, बनावटी।

jkr chru rd ¼ekgu jkd'k½ % okpu vkj fo'y"k.k

है, ओठों से मदिरा छलकती है, रोम-रोम से मदिरा झलकती है। फिर तुम कैसे कहती हो कि तुम मानवी हो?···· एक बार फिर वही शब्द कहो।

lUnjh % हृदयेश्वर!

uUn % पायल, मदिरा और सुन्दरी– इनसे आगे सब शून्य है। आज मेरी कामना कितनी तृप्त है! सुन्दरी, कामना की पूर्ति का क्षण ही वास्तव में e/kekl है। वही यौवन है, वही जीवन है। मेरे रोम-रोम में आज कलियाँ चटक रही हैं। सितारे आकाश से मेरी आँखों के सामने उतर आये हैं। देखो, वे कैसे थिरकते हुए एक-दूसरे में उलझ जाते हैं!

¼bl chp uR; dh xfr e f'kfFkyrk vk tkrh gA½

: परंतु मुझे हवा कुछ रुकती-सी क्यों जान पड़ती है? समय कुछ ठहरा-ठहरा-सा क्यों लगता है? नर्तकी!

¼uR; dk Loj #d tkrk gA½

pfUndk % आज्ञा, राजकुमार!

uUn % तेरे चरणों में शिथिलता क्यों आ रही थी, नर्तकी? यह वासन्ती हवा तेरे शरीर में लोच नहीं भरती?···· नहीं?···· तूने कभी किसी से प्रेम नहीं किया? तब तू कैसे नाच सकती है?···· सुन्दरी, यह नर्तकी किसी से प्रेम नहीं करती?

lUnjh % नाचती रह, चन्द्रिका! आज प्रभात होने तक नृत्य चलता रहेगा।

pfndk % अपराध क्षमा हो, राजकुमारी! रात आधी से अधिक जा चुकी है और मैं····।

uUn % रात आधी से अधिक जा चुकी है तो क्या हुआ? तेरी आँखों में नींद भर रही है? पैरों में शिथिलता आ गयी है? तो क्या हुआ? तू शिथिलता के साथ डगमगा। fufnrk की तरह नाच। तुझे पता नहीं, नर्तकी कि आज कामोत्सव की रात है! रात रहते तेरे पैर रुक जायें तो यह अपशगुन होगा। आरम्भ कर नर्तकी, फिर से आरम्भ कर। आज तेरे नृत्य के स्वर के साथ ही सूर्योदय होगा। नाच! सुन्दरी

lUnjh % राजकुमार स्वयं आग्रह कर रहे हैं, चंद्रिका! पहले तू दो-दो पहर बिना थके नाचती रही है। आज तो तुझे नाचते एक पहर भी नहीं हुआ।

uUn % तू कैसी चन्द्रिका है जो नाचते-नाचते थक गयी है? चन्द्रिका तो सारी रात नदी की लहरों पर और पत्तों के झुरमुटों पर नाचती है और फिर भी नहीं थकती। तू चन्द्रिका है तो तू भी नाच। ¼l;ky e efnjk mMyu dk Loj½ यह ले, थोड़ी मदिरा पी ले। मदिरा में jEHkk vkj mo'kh के प्राण रहते हैं। दो घूँट पी ले तो तू अपने आप नाचने लगेगी। फिर तेरे पैरों में शिथिलता नहीं रहेगी। तू ऐसे नाचेगी, जैसे कमलपत्र पर वर्षा नाचती है, दर्पण पर पारा नाचता है। ऐसे ही नाचेगी न? तो ले····! लेती क्यों नहीं?

pfUndk % मुझे क्षमा करें, राजकुमार!···· मैं मदिरा का सेवन नहीं करती।

uUn % ¼dN reddj½ तू मदिरा का सेवन नहीं करती? क्यों? क्या तू नर्तकी नहीं है? एक नर्तकी बिना mUekn के कैसे जी सकती है?···· तू आज कामोत्सव की रात में कामदेव का अपमान करना चाहती है?···· ले, पी!

lUnjh % एक नया हठ किस लिए है, चन्द्रिका? तूने पहले कितनी ही बार तो अपने हाथों से मदिरा ढालकर राजकुमार को पिलायी है और उनके हाथ से मधुपात्र लेकर स्वयं पी है। आज यह नयी बात क्या है कि तू उनका दिया हुआ मधुपात्र ठुकरा रही है? क्या तू इतना थक गयी है कि तेरा विवेक भी स्थिर नहीं रहा?

pfndk % मैं थकी नहीं हूँ, राजकुमारी, और न ही मेरा विवेक अभी खोया है। मैं मध्य-रात्रि से अब तक आपके आदेशानुसार नृत्य करती रही हूँ। परंतु अबकृकृ।

lUnjh % हाँ-हाँ, कह न। यदि तू थकी नहीं तो अब तेरे चरण किसलिए रुके हुए हैं? तू राजकुमार के प्रसाद का frjLdkj किसलिए कर रही है?

pfUndk % यह तिरस्कार नहीं है, राजकुमारी! ...केवल अपने विश्वास का आग्रह है।

lUnjh % विश्वास का आग्रह? किस विश्वास का?

pfUndk % इस विश्वास का, राजकुमारी, कि जीवन घड़ी भर के उन्माद का ही नाम नहीं

मधुमासःबसंत ऋतु का समय, चैत्र का महीना; निद्रिताःसोयी हुई; उन्मादःपागलपन; तिरस्कारः अपमान, अनादर, अवज्ञा।

है। मेरा हृदय आज मदिरा को स्वीकार नहीं करता। मैं नर्तकी के रूप में अपने कर्त्तव्य का पालन करती हुई अब तक नाचती रही हूँ, परंतु अब रात बीतने वाली हैyyyy।

uUn % रात बीतने वाली है तो क्या हुआ? दिन बीतने के बाद दूसरी रात भी तो आयेगी। ...मदिरा का प्याला ओठों से लगा रहे तो सारा जीवन एक मादक रात बना रह सकता है।.... इधर आ, नर्तकी, मेरे पास आकर पी।

pfUnzdk % नहीं, राजकुमार! मेरा हाथ मत f>a>ksM+,। मैं नहीं पी सकती।

uUn % ¼vkos'k ds lkFk½ नहीं पी सकती तो मत पी! पर नृत्य तुझे अवश्य करना होगा। नन्द की रात जीवन-भर समाप्त नहीं होती। नाच!

lqUnjh % नृत्य आरम्भ कर, चन्द्रिका!

pfUnzdk % नहीं, राजकुमारी! मैं और नहीं नाच सकती। नाचना केवल शरीर की ही कला नहीं है। अब थोड़ी ही देर में प्रभात होने वाली है। मेरा मन है कि मैं एक पहर आँखें मूँदकर चुपचाप बैठी रहूँ। प्रभात होने पर आज मुझे दीक्षा ग्रहण करने के लिए जाना है।

lqUnjh % दीक्षा? कैसी दीक्षा?

pfUnzdk % मैं कल से भिक्षुणी बनना चाहती हूँ, राजकुमारी! प्रभात होते ही मैं नदी-तट पर जाकर दीक्षा ग्रहण करूँगी।

lqUnjh % तू? तू भी गौतम बुद्ध से दीक्षा ग्रहण करेगी? ¼gWldj½ क्यों, क्या तेरा भी शरीर ढलने लगा है जो तुझे ऐसी बात सूझ रही है?

pfUnzdk % शरीर? शरीर किसका नहीं ढल रहा है, राजकुमारी?.... और मैं अकेली ही नहीं, मेरी सात वर्ष की पुत्री सुचित्रा भी साथ दीक्षा ले रही है।

lqUnjh % ¼O;aX;iw.kZ Loj esa½ सुचित्रा भी दीक्षा ले रही है? तब तो उसे युवा होने पर फिर दूसरी बार दीक्षा लेनी पड़ेगी।

pfUnzdk % सम्भव है, उसे कितनी ही बार दीक्षा लेनी पड़े। उसमें अपने को बदलने की कामना बनी रहे, यही बहुत होगा। मैं केवल इतना चाहूँगी कि वह इतनी जड़ न हो जाये कि अपने वर्तमान को ही सब-कुछ समझ बैठे।

lqUnjh % तू अपनी मर्यादा से बाहर जा रही है, चन्द्रिका!

pfUnzdk % अब प्रभात होने वाला है, राजकुमारी! और मैं जो कुछ कह रही हूँ, वह एक नर्तकी के रूप में नहीं, बल्कि एक भिक्षुणी के रूप में। नर्तकी अपने पेट के शासन को मानकर चलती है, पर भिक्षुणी केवल अपने हृदय के शासन को स्वीकार करती है।

uUn % परन्तु अभी तेरे पैरों में घुंघरू बँधे हैं, नर्तकी! अभी तेरे भिक्षुणी बनने तक रात का पिछला पहर बाक़ी है।.... तू अभी से क्यों जीवन का मोह छोड़ रही है? अभी तो नाच! प्रभात होने तक तो तू भिक्षुणी नहीं है। तब तक तो तेरा हृदय भिक्षुणी का हृदय नहीं है। तो तब तक तो नाच!

lqUnjh % राजकुमार के आदेश का पालन आवश्यक है, चन्द्रिका! तुझे इस समय नाचना ही होगा।

pfUnzdk % यदि चरणों में गति न आये, बाँहों में कम्पन न हो, तो भी?

lqUnjh % हाँ, तो भी नाचना होगा। तेरे चरणों की गति और तेरी बाँहों का कम्पन आज तेरा नहीं है। तुझे उसका मूल्य दिया जा चुका है। आज रात के अंत तक के लिए तेरी कला बिकी हुई है। नाच! अभी प्रभात होने तक तू एक खरीदी हुई नर्तकी है। जीवन का कुछ भी मोह है, तो तुझे अवश्य नाचना होगा।

pfUnzdk % मुझे जिस जीवन का मोह है, राजकुमारी, वह दिन और घड़ियों में बँटा हुआ जीवन नहीं है। उस मोह के लिए आप मुझे नहीं नचा सकतीं। परन्तु मैं आपके दिये हुए मूल्य का दावा मानती हूँ। उस मूल्य से खरीदी हुई नर्तकी अवश्य नाचेगी। ¼iSj ds >Vds ds lkFk fQj uR; dk 'kCn vkjEHk gksrk gSA cgqr 'kh?kz gh ;g 'kCn rh[kk vkSj m)r gks mBrk gSA½

uUn % तू कितना सुंदर नाचती है, नर्तकी! ....मेरे चारों ओर हर चीज़ नाच रही है। नीचे शय्या के फूलों के हृदय धड़क रहे हैं।....परन्तु ये फूल इस तरह मसले और

झिझोड़ना–मरोड़ना।

मुरझाये-से क्यों हो रहे हैं? क्या हुआ इनको? सुन्दरी, इन फूलों को क्या हुआ है? इन्हें पता नहीं कि आज कामोत्सव की रात है?

¼lglk uR; d 'kCn e f'kfFkyrk vkus yxrh gA cgqr nj vR;Ur /khek leor Loj luk;h nrk g ½

/kEe 'kj.k xPNkfeA

c) 'kj.k xPNkfeA

l?k 'kj.k xPNkfeA½

uUn % तेरे पैर फिर क्यों शिथिल हो रहे हैं, नर्तकी? जितनी देर नाचना है, उल्लास के साथ नाच। रात अभी समाप्त नहीं हुई। मदिरा का उन्माद अभी तो पूर्णता को पहुँचा है। तू भी उन्माद के साथ नाच; नर्तकी, गहरे उन्माद के साथ नाच! ¼uR; dk 'kCn fQj rho gkrk gA lkFk gh nj l lquk;h nrk gvk leor Loj Øe'k ikl vkrk tkrk gA ml 'kCn d vkjkg d lkFk uR; dh xfr cgqr f'kfFky gku yxrh gA lglk uR; #d tkrk gA½

lUnjh % रुक क्यों गयी, चन्द्रिका? अभी तुझे रुकने के लिए नहीं कहा गया।

परंतु चन्द्रिका उत्तर न देकर सुनायी देते हुए leor स्वर के साथ स्वर मिलाकर बोलने लगती है :

/kEe 'kj.k xPNkfeA

बुद्धं शरणं गच्छामि।

l?k शरणं गच्छामि।

समवेत स्वर धीरे-धीरे दूर चला जाता है। परंतु चन्द्रिका उसी तरह बोलती रहती है:

धम्मं शरणं गच्छामि।

बुद्धं शरणं गच्छामि।

संघं शरणं गच्छामि।

lUnjh % ¼pkV [kk;s Loj e½ यह सब क्या है, चन्द्रिका? तूने यहाँ ये शब्द बोलने का आदेश किससे प्राप्त किया है?

pfn dk % ¼[kk;s-l Loj e½ यह आदेश? जाने किसका यह आदेश है? परंतु इस आदेश का उल्लंघन नहीं हो सकता, राजकुमारी! इस आदेश से बड़ा और कोई आदेश नहीं है। धम्मं शरणं गच्छामि। बुद्धं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि।

¼bl chp gh vydk dk ?kcjk;k gvk Loj nj l ikl vkrk gA½

vydk % राजकुमारी!···· राजकुमारी!

lUnjh % क्या है, अलका? इस तरह घबरायी हुई क्यों है?

vydk % अपराध क्षमा हो, राजकुमारी····!

lUnjh % तू बात कह।

vydk % राजकुमारी, अभी भिक्षुओं की एक मंडली यहाँ से होकर गयी है;;;;;।

lUnjh % तो उसमें विचलित होने की क्या बात है? भिक्षुओं की मंडलियाँ प्रायः राजमहलों के पास से गुज़रती हैं।

vydk % नहीं, राजकुमारी, यह साधारण भिक्षुओं की मंडली नहीं थी। स्वयं गौतम बुद्ध इस मंडली के साथ थे। वे भिक्षा पाने के लिए कुछ क्षण हमारे द्वार के पास रुके रहे। मैंने जल्दी-जल्दी भिक्षा की सामग्री जुटायी, पर मेरे द्वार तक पहुँचने से पहले ही वे आगे चले गये।

pfUndk % ¼foHkkj Loj e½ स्वयं गौतम बुद्ध यहाँ आये थे? वे स्वयं?...अब प्रभात होने वाला है, राजकुमारी! मुझे आज्ञा दीजिए। आज इस नर्तकी चन्द्रिका का यह अन्तिम नमस्कार स्वीकार कीजिए।

¼?kq?k: c/k ikjk d nj tku dk 'kCnA½

uUn % यह सब क्या हो रहा है? चन्द्रिका क्यों चली गयी? अलका किस लिए आयी है?···· गौतम बुद्ध को भिक्षा चाहिए? तो दे दो भिक्षा। जो कुछ इस घर में है, सब भिक्षा में दे दो-एक सुन्दरी को छोड़कर। सुन्दरी मेरे पात्र की भिक्षा है। क्यों सुन्दरी?

समवेत–संयुक्त, मिला हुआ; धम्मं–धर्म की; शरणं–शरण में; गच्छामि–जाता हूँ/जाती हूँ; संघं–बौद्ध भिक्षुओं के समूह।

fgUnh ,dkdh vkSj vU; n'; fo/kk,¡

lqUnjh % तू जा, अलका! राजकुमार थोड़ी देर सोयेंगे।

vydk % जो आज्ञा, राजकुमारी।

uUn % राजकुमारी सुन्दरी के वक्ष पर सिर रखकर सोयेंगे। यूँ, इस तरह।
¼vO;Dr ?k.kki.k gkL; dk 'kCn tk uUn d dkB l gh fudyk irhr gkrk gA½
: यह कौन हँस रहा है? यह कौन है, सुन्दरी?

lqUnjh % कोई भी तो नहीं। यहाँ कौन है जो हँसेगा? सो जाइए।
¼fQj uUn d gh dB l ?k.kk vkSj O;X;i.k 'kCn lqukbZ nrs g % uhp! *yEiV*! dkeh!½

uUn % यह कौन बोल रहा है? कानों के बहुत पास से किसी की आवाज़ आती है। कौन है यह?

lqUnjh % ¼dN funzn;k, Loj e½ आपके शयनकक्ष में आपके और सुन्दरी के अतिरिक्त और हो कौन सकता है? दासियाँ सब चली गयी हैं।

uUn % परन्तु तुमने अभी-अभी किसी के शब्द नहीं सुने? यहाँ अवश्य कोई तीसरा भी है।

lqUnjh % तीसरा यहाँ कौन हो सकता है? यह केवल आपके मन का भ्रम है। सो जाइये। चारों ओर चन्दनदीप जल रहे हैं। कोई हो तो दिखायी तो दे।

uUn % दिखायी तो कोई भी नहीं देता, फिर भी कोई था अवश्य। पहले वह हँसा, फिर उसने कहा.... ।

lqUnjh % रहने दीजिए। मैं उठकर दीपक बुझाए देती हूँ। फिर आपको कोई स्वर सुनायी नहीं देगा।
¼{k.k-Hkj dk O;o/kku½

uUn % तुमने इतना गहरा अँधेरा क्यों कर दिया, सुन्दरी? कोई एकाध दीपक तो जलता रहने दो।

lqUnjh % नहीं। दीपक जलता रहेगा तो फिर किसी का शब्द आपके कानों को फुसलायेगा। अँधेरा रहने से ही ठीक से नींद आती है।

uUn % परंतु यह अँधेरा मुझे दबा रहा है। सुन्दरी, एक दीपक अवश्य जलता रहने दो।

lqUnjh % नहीं, एक भी नहीं। बाहर पत्तियों पर ओस पड़ रही है। दीपक का आलोक उसके एकान्त अभिसार को अस्थिर आँख से देखेगा। आप आँखें मूँद लीजिए।
(फिर नन्द के कंठ से व्यंग्य-हास और घृणा और तिरस्कार के शब्द – डूब जा! अँधेरे में डूब जा! तेरे लिए कोई दीपक नहीं जलेगा। डूब! डूब! डूब!)

uUn % नहीं, नहीं, नहीं! मुझे उजाला चाहिए। सुन्दरी, मैं उजाला चाहता हूँ। यह अँधेरा मुझे निगल जायेगा। मुझे उठकर एक दीपक जला लेने दो।

lqUnjh % नहीं, नहीं। आँखे मूँद रहिए। अपने-आप नींद आ जायेगी।

uUn % नहीं, मुझे नींद नहीं आयेगी। यह अँधेरा मुझसे नहीं सहा जाता। सुन्दरी, इतना गाढ़ा अँधेरा पहले भी कभी हुआ है? तुम मुझे यह अँधेरा दूर क्यों नहीं करने देतीं? सुन्दरी, सो गयी? इतनी जल्दी कैसे सो गयीं? ओह! यह रात कामना के उत्सव की रात थी। अब यह रात इतनी उदास क्यों हो गयी है?.... क्या इस रात का कोई छोर नहीं है? कब समाप्त होगी यह रात? ओह!
(दूर प्रभात के मंगलवाद्य बजने का शब्द)

uUn % तो रात नहीं है? प्रभात हो चुका है? हाँ, प्रभात हो चुका है, तभी तो वह भिक्षुओं की मंडली आयी थी। क्या कह रही थी अलका? कि गौतम बुद्ध स्वयं उस मंडली के साथ थे? और कि यहाँ वे भिक्षा के लिए रुके, और उन्हें भिक्षा नहीं मिली? वह यहाँ आकर चले गये और मैंने उनका स्वागत भी नहीं किया! मैंने मैत्रेय से कहा था कि इधर आयेंगे तो मैं उनका स्वागत अवश्य करूँगा! .... अब वे फिर तो नहीं आयेंगे! नहीं, मुझे उनके पीछे जाना चाहिए। वे दूसरी बार नहीं आयेंगे। सुन्दरी!

lqUnjh % (निंदियाए हुए स्वर में) अभी आप सोये नहीं?

uUn % नहीं, सुन्दरी! अब प्रभात हो गया है। अब सोने का समय नहीं है। मैं कुछ समय के लिए बाहर जा रहा हूँ।

लम्पटःविषयी

lqUnjh % (जैसे चौंककर) बाहर जा रहे हैं। इस समय कहाँ जायेंगे आप?

uUn % मैं उधर जा रहा हूँ, जिधर भिक्षुओं की मंडली गयी है। भाई गौतम यहाँ से होकर लौट गये हैं। मुझे एक बार उनके पास अवश्य जाना चाहिए।

lqUnjh % (सहसा सचेत होकर) तो आप नदी-तट पर जायेंगे! आप भी आज दीक्षा ले रहे हैं क्या?

uUn % देखो सुन्दरी.... बात यह है.... मैं शायद तुम्हें समझा नहीं पाऊँगा। तुम मुझे जानती हो....।

lqUnjh % मैं आपको जानती हूँ और अपने को भी जानती हूँ। आप जाना चाहते हैं तो अवश्य जाइए। मैं आपको रोकूँगी नहीं।

uUn % तुम कितनी अच्छी हो, सुन्दरी! मैं उनसे मिलकर केवल क्षमा माँगना चाहता हूँ कि यहाँ किसी ने उनका सत्कार नहीं किया। मैं बहुत शीघ्र ही लौट आऊँगा।

lqUnjh % नहीं, कितनी देर में आयेंगे, यह बताकर जाना होगा।

uUn % तुम्हीं बता दो। जितनी देर में कहोगी, लौट आऊँगा।

lqUnjh % देखिए, उस कटोरी में चंदनलेप है?

uUn % हाँ, है तो सही। पर चंदनलेप का इस समय क्या होगा?

lqUnjh % इससे मेरे माथे पर fo'ks"kd बनाइए।

(क्षण-भर का व्यवधान।)

uUn % अच्छा, लो। यह.... पूरे माथे पर विशेषक बन गया। अब?

lqUnjh % इस विशेषक के सूखने से पहले-पहले लौट आना होगा।

uUn % (हँसकर) तो तुम्हें जब तक मैं लौट न आऊँ तब तक इस विशेषक को गीला रखना होगा।

lqUnjh % वाह! ऐसे तो आप लौटकर आयेंगे ही नहीं।

uUn % नहीं, यह तो प्रतीक्षा की अवधि बढ़ाने का एक बहाना मात्र है। तो, नहीं सूखने दोगी न इसे, मेरे लौटने तक?

lqUnjh % नहीं, यह तो अब सूखेगा, सूख जायेगा। आपको उससे पहले ही लौटकर आना होगा।

uUn % तुम इस तरह इन आँखों से देखोगी तो शायद मैं जा भी नहीं पाऊँगा। अच्छा, तो तुम्हारा विशेषक सूखने तक....।

(कुछ वस्तुओं के इधर-उधर फेंके जाने का शब्द।)

vydk % (हताश और अस्थिर स्वर में) राजकुमारी! यह आप क्या कर रही हैं, राजकुमारी? शृंगार की सब सामग्री इधर-उधर बिखरी पड़ी है, फूलों की मालाएँ आपने नोंच-नोंचकर फेंक दी हैं। आपका मन इतना अस्थिर क्यों हो रहा है, राजकुमारी?

lqUnjh % जाओ, अलका, जाओ। मुझे इस समय किसी की आवश्यकता नहीं। मुझे एकान्त चाहिए, एकान्त। जाओ।

vydk % मैं अभी चली जाऊँगी, राजकुमारी! आप पहले कुछ स्वस्थ हो जाइए। मैं इस पात्र में जल लायी हूँ। आप इससे....।

(जलपात्र के फेंके जाने का शब्द।)

lqUnjh % नहीं, मुझे जल नहीं चाहिए। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मेरे आवासगृह के सब झरोखे बन्द कर दो। मैं अपने चारों ओर अँधेरा चाहती हूँ, केवल अँधेरा।

vydk % आप इस तरह अस्थिर न हों, राजकुमारी! मुझे विश्वास है कि राजकुमार अभी थोड़ी ही देर में लौट आयेंगे। अभी उन्हें गये बहुत अधिक समय नहीं हुआ।

lqUnjh % मैं तुझे जो आदेश दे रही हूँ तू उसका पालन कर। मुझे कोई आश्वासन नहीं चाहिए। किसी की सहानुभूति नहीं चाहिए। तू जा! मुझे आवश्यकता होगी तो मैं तुझे बुला लूँगी।

vydk % जो आज्ञा, राजकुमारी!

lqUnjh % (स्वगत) उन्हें गये अधिक समय नहीं हुआ। और कितना समय उन्हें चाहिए? नदी तट यहाँ से दूर नहीं है! अब तक जाकर वह दो बार लौट सकते थे।.... वह क्यों नहीं आये?.... उन्हें क्यों ध्यान नहीं आया कि उन्हें मेरा विशेषक सूखने से पहले लौट आना है?.... आज तक कभी नहीं हुआ कि उन्होंने मुझे वचन दिया हो और उसका पालन न किया हो।.... ओह! मैं कितनी देर से इस विशेषक को गीला

विशेषक–तिलक।

रखने का प्रयत्न कर रही हूँ और यह कितनी जल्दी सूखता जा रहा है। वह नहीं आयेंगे? नहीं आयेंगे तो क्या होगा?····जीवन किस दिशा में जायेगा? मेरा विश्वास किस दिशा में जायेगा?····नहीं, वह आयेंगे। अवश्य आयेंगे।···· यह भला सम्भव है कि वह नहीं आयें? परंतु हृदय बैठता क्यों जा रहा है? क्यों प्रतीत होता है कि मैं अथाह सागर में डूब रही हूँ? नहीं-नहीं। मुझे अपने आपको उबारना होगा। मुझे अपने विश्वास को सहारा देना होगा। परंतु कैसे? किस आश्रय से?

(फिर दूर से पास आता हुआ भिक्षुओं का समवेत स्वर सुनायी देता है :

धम्मं शरणं गच्छामि।
बुद्धं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

फिर वही स्वर! यह भिक्षुओं की मंडली फिर इस ओर आ रही है?····भिक्षा के लोभी!···· इन्हें यहाँ से क्या भिक्षा चाहिए? (व्यंग्यपूर्ण स्वर में) गौतम बुद्ध! भिक्षुओं के सम्राट!····मैं जाकर उनके पात्र में भिक्षा डालती हूँ।···· मैं भी तो देखूँ कि यह निर्वाण का पाखंड क्या है?···· अलका!

vydk % (दूर से) आयी, राजकुमारी! (पास आकर) राजकुमारी, भिक्षुओं की मंडली फिर इस ओर आ रही है। मैंने यह थाली में भिक्षा की साम्रगी सजा ली है। जल्दी से जाकर उन्हें भिक्षा दे दूँ, नहीं तो वे फिर निकलकर आगे चले जायेंगे।

lqUnjh % ठहर, अलका!···· यह भिक्षा की थाली मुझे दे। मैं अपने हाथ से उन्हें भिक्षा दूँगी। (इस बीच भिक्षुओं का स्वर चलता रहता है जो अब बहुत पास आ जाता है।)

vydk % (दबे हुए स्वर में) राजकुमारी, देखिए। राजकुमार स्वयं भिक्षुओं की मंडली के साथ आ रहे हैं। उन्होंने भी अपने हाथ में भिक्षापात्र ले रखा है। यह सब इतनी जल्दी कैसे हो गया?

lqUnjh % नहीं, नहीं। ये वह नहीं हो सकते। परंतु आकृति तो वही है। स्वर भी वही है। मुझे सहारा दे, अलका! यह भिक्षा की सामग्री भी तू संभाल ले।
(भिक्षुओं का समवेत स्वर रुक जाता है।)

uUn % मैंने तुम्हें वचन दिया था, सुन्दरी, कि मैं लौटकर अवश्य आऊँगा। इसीलिए मैं आया हूँ।···· तुम्हारा विशेषक सूख तो नहीं गया?

lqUnjh % (अव्यवस्थित स्वर में) यह कैसा विनोद है, मेरे देवता? यह आपने भिक्षु का बाना क्यों धारण कर रखा है? आपके हाथ में भिक्षापात्र क्यों है?

uUn % मेरे हाथ में भिक्षापात्र इसलिए है, सुन्दरी, कि मैं भिक्षा लेने आया हूँ। परंतु जो भिक्षा की सामग्री तुम लायी हो, वह सामग्री मुझे नहीं चाहिए।

lqUnjh % तो सचमुच···· सचमुच···· आपने भी भिक्षु का वेश स्वीकार का लिया! मैं····मैं आज आपको भिक्षा दूँगी? मैं आपको क्या भिक्षा दे सकूँगी?

uUn % तुम बहुत कुछ दे सकती हो, सुन्दरी। तुम्हें अपने रूप पर गर्व है न! आज वह गर्व इस भिक्षापात्र में डाल दो। तुम्हें अपनी सुखकामना ही सबसे बड़ी कामना प्रतीत होती है न? आज उस कामना को भी भिक्षा में दे डालो। रात बीत चुकी है, सुन्दरी! मैंने अपने अन्तर का अन्धकार गौतम बुद्ध के भिक्षापात्र में डाल दिया है। तुम अपने अन्तर का अंधकार मेरे भिक्षापात्र में डाल दो।

lqUnjh % मुझे कुछ नहीं सूझता। मुझे सहारा दीजिए। मेरी कुछ समझ में नहीं आता।

uUn % सहारा लेने के लिए स्वयं आगे बढ़ो सुन्दरी! भिक्षुओं के शब्दों के साथ शब्द मिलाओ। तुम्हें अपने आप सहारा मिल जायेगा।
(भिक्षुओं का समवेत स्वर फिर आरम्भ होता है :

धम्मं शरणं गच्छामि।
बुद्धं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।)

% दूसरी बार इन शब्दों को दोहराए जाने पर सुन्दरी कुछ अनिश्चित से स्वर के साथ बोलती है :

धम्मं शरणं गच्छामि।
बुद्धं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।)

ck/k iz'u

(निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उनके नीचे दिए गए स्थान पर दीजिए।)

1. अलका और सुन्दरी गौतम बुद्ध और यशोधरा के बारे में किस तरह अलग-अलग ढंग से सोचती हैं?

   i) ....

   ii) ....

   iii) ....

   iv) ....

   v) ....

   vi) ....

2. सुन्दरी कामोत्सव का आयोजन क्यों करती है?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

3. नंद का इस आयोजन के प्रति क्या दृष्टिकोण है?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

4. नाटक की चरम परिणति किस रूप में होती है?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

24-3 jsfM;ks ukVd dk lkj

'रात बीतने तक' रेडियो नाटक ऐतिहासिक कथा पर आधारित है। महात्मा बुद्ध के उपदेशों से प्रभावित होकर बड़ी तादाद में लोग गृहस्थ जीवन त्याग कर बौद्ध भिक्षु-भिक्षुणी हो रहे थे। गौतम के चचेरे भाई नन्द और उनकी पत्नी सुन्दरी को संन्यास के प्रति इस तरह का लगाव उचित प्रतीत नहीं होता। वे वक्त की हवा के खिलाफ अपना भोग-विलासपूर्ण गृहस्थ जीवन कायम रखना चाहते हैं। साथ ही यह भी चाहते हैं कि नगर के अन्य लोग भी उनके साथ हों, हर कोई गौतम बुद्ध का अनुयायी न हो जाए। इसलिए बौद्ध धर्म में दीक्षा के लिए तय दिन की पूर्व संध्या से ही अपने महल में रात भर के कामोत्सव के आयोजन की तैयारी करते हैं। पुष्प-सज्जा, दीप-सज्जा, सुगंध-धूप, नृत्य-संगीत के आयोजन के साथ कुल मिलाकर संन्यास

के वातावरण के विपरीत भोग-विलास का वातावरण तैयार करके गार्हस्थ्य की सार्थकता स्थापित करने का प्रयास है जिसमें राजकुमार नंद और उनकी पत्नी राजकुमारी सुन्दरी अपने दास-दासियों, नर्तकियों को, प्रकृति और पशु-पक्षियों को शामिल करने का प्रयास करते हैं।

उत्सव के माहौल के माध्यम से वे वैराग्य के परिवेश को दर किनार करना चाहते हैं। उनके जीवन में प्रेम का उल्लास मौजूद है और संगीत, नृत्य, मदिरा के वातावरण में वह अपने चारों ओर मौजूद वैराग्य की मानसिकता को भुला देने का भरसक प्रयास करते हैं। उन्हें पूरी तरह विश्वास है कि वे एक-दूसरे से जीवन भर इसी तरह प्रेम करते रहेंगे और प्रेम के सुखों तथा राजसी भोग विलास के आनंद को प्राप्त करते रहेंगे। अपने आत्मविश्वास की दृढ़ता को स्थापित करते हुए सुन्दरी निर्वाण, मोक्ष आदि के गौतम बुद्ध के संदेश की हँसी उड़ाती हुई दिखाई देती है। अपने प्रेम की संपूर्णता के आकर्षण का भी उसे अभिमान है। यहाँ तक कहती है कि गौतम बुद्ध इसलिए संन्यासी बने कि यशोधरा के प्रेम में इतना आकर्षण ही नहीं था कि गौतम बुद्ध को बाँध सके। किंतु वक्त भी हवा के खिलाफ नंद और सुंदरी का यह प्रयास सफल नहीं हो पाता। उनके राजमहल की परिचारिका अलका, उनकी राजनर्तकी चंद्रिका उनकी आज्ञा का पालन तो करती है– कामोत्सव में नृत्य प्रस्तुति करती है किंतु हृदय से कामोत्सव में रमने में असमर्थ हैं। उसके विनम्र प्रतिरोध की ओर पहले तो यह प्रेमी युगल (नंद और सुन्दरी) बहुत ध्यान ही नहीं देते पर जब दो प्रहर रात्रि बीतने पर नर्तकी के घुँघरू थमने लगते हैं तो नंद और सुन्दरी चौंकते हैं। वे बार-बार उसे उत्साहित करते हैं, मदिरा सेवन कर नृत्य में उल्लास पैदा करने के लिए जोर देते हैं किंतु नर्तकी नृत्य की अनिच्छा प्रकट करती जाती है। नंद के सख्ती बरतने पर वह कह उठती है कि नाचना केवल शरीर की कला नहीं है और अब उसका मन नृत्य से विरक्त हो रहा है क्योंकि प्रभात होते ही उसे दीक्षा ग्रहण करने जाना है। सुन्दरी उसकी बात पर पहले तो उपहास करती है किंतु बाद में ध्यान दिलाती है कि उसको रात भर नृत्य करने के लिए कीमत चुकाई जा चुकी है; अतः उसे हर हालत में रात भर नाचना होगा। नर्तकी इस बात का बुरा मानती हुई कहती है कि उसका हृदय नाचने को बिल्कुल तैयार नहीं है फिर भी चाहे प्राण चले जाएँ किंतु चूँकि उसे मूल्य दिया जा चुका है तो वह खरीदी हुई नर्तकी के रूप में नाचेगी अवश्य।

वह फिर से बहुत तेज़ी से नृत्य शुरू करती है मानो अपने आप से संघर्ष करती हुई नाच रही हो। नंद उसे उन्माद के साथ नाचने के लिए कहता जाता है परंतु दूर से भिक्षु मंडली का स्वर सुनकर नर्तकी के पैरों में शिथिलता आती जाती है। सुंदरी उससे बार-बार कहती है कि नृत्य रुकना नहीं चाहिए। किंतु नर्तकी का मन 'बुद्धं शरणं गच्छामि' की आवाज में खोया जाता है और वह स्वयं भी उन्हीं के स्वर में अपना स्वर मिलाती हुई कह उठती है ''बुद्धं शरणं yyyy।''

तभी अलका घबराए स्वर में आकर बताती है कि अभी थोड़ी देर पहले भिक्षु मंडली के साथ स्वयं गौतम बुद्ध उनके द्वार पर आए थे। किंतु अलका जब तक सामग्री लेकर पहुँची तब तक वे लोग आगे बढ़ चुके थे। बुद्ध के आने की सूचना से अभिभूत होकर नर्तकी चंद्रिका अपना अंतिम नमस्कार प्रस्तुत कर चली जाती है। नंद बुद्ध के आने की सूचना से चौंकते हैं। सुन्दरी अलका सो जाने का आदेश देकर नंद से सोने के लिए कहती है।

गौतम बुद्ध के स्वयं भिक्षा पात्र लेकर आने की सूचना को नंद बहुत हल्के ढंग से लेते हुए कह तो देता है कि ''जो कुछ इस घर में है सब भिक्षा में दे दो– एक सुन्दरी को छोड़ कर''। किंतु उसके अंतर्मन पर यह घटना छा जाती है। धीरे-धीरे उसे पश्चाताप हो उठता है। उसे अपने आप से घृणा होने लगती है कि वह इतना विलासी और लम्पट है कि द्वार पर आए गौतम बुद्ध के स्वागत के लिए भी स्वयं उठ कर नहीं गया। वह महसूस करता है कि गौतम बुद्ध लौट गए हैं अब दोबारा वह नहीं आएँगे। इसलिए अब उसे स्वयं उनसे मिलने जाना चाहिए। सुन्दरी के बहुत रोकने पर भी वह चला जाता है यह वादा करके कि बहुत जल्दी लौटेगा।

अंत में सुन्दरी का भय सत्य में बदल जाता है। नंद लौटता तो है किंतु भिक्षु के वेश में। वह उसे भी भिक्षुणी बनने की सलाह देता है। अंत में, सुन्दरी भी अपनी इच्छा के विरुद्ध 'बुद्धं शरणं गच्छामि' का उच्चारण करती है।

24-4 lizlax O;k[;k

आशा है आपने ''रात बीतने तक'' का वाचन ध्यानपूर्वक किया होगा। पिछली इकाइयों में आपने एकांकियों से दिए गए उद्धारणों की संप्रसंग व्याख्या करना सीखा है। अब हम यहां इस रेडियो नाटक का एक अंश उद्धृत कर रहे हैं उनकी संदर्भ सहित व्याख्या के लिए आपको कुछ संकेत भी दिए गए हैं :

m)j.k 1

कह, रुक क्यों गई ····मैंने कहा न, तू अभी बहुत भोली है, अलका! नारी का आकर्षण क्या कर सकता है, यह तू नहीं समझ सकती। यशोधरा भी नहीं समझ सकी। ज्वाला क्या कर सकती है, यह या ज्वाला जानती है, या वह काठ जो उसमें जलता है। यह तू कैसे जान सकती है, भोली अलका तू जो इतनी अनजान है? जा मेरे लिए श्रृंगार का सामान ला। आज कामोत्सव की रात है।

lanHkZ

नाटककार का नाम, रचना का नाम, लेखक के महत्त्व के बारे में

izlax

गौतम बुद्ध के भाई नंद और पत्नी सुंदरी का लौकिक जीवन के प्रति आग्रह और भिक्षुक जीवन का विरोध। सुंदरी के कथन में इसी का भाव है।

O;k[;k

जीवन के सुख और आनंद के प्रति मोह का भाव जीवन के भोग का आनंद वही ले सकता है जो उसे भोगता है।

fo'ks"k

ewy Hkko

जीवन के प्रति भोगवादी और वैराग्यवादी दृष्टि की टकराहट संस्कृतनिष्ठ भाषा, तत्सम शब्दावली

Hkk"kk

प्रवाहमयी भाषा

'kSyh

भावात्मक शैली

vU; oSf'k"V~;

....

....

....

vH;kl

निम्नलिखित उद्धरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिएः

संभव है उसे कितनी ही बार दीक्षा लेनी पड़े। उसमें अपने को बदलने की कामना बनी रहे, यही बहुत होगा। मैं केवल इतना चाहूँगी कि वह इतनी जड़ न हो जाये कि अपने वर्तमान को ही सब कुछ समझ ले।

lanHkZ

....

....

....

ilx

....

....

....

0;k[;k

....

....

....

....

fo'k"k
ey Hkko

....

....

....

Hkk"kk

....

....

....

'kyh

....

....

....

vU; of'k"V;

....

....

....

....

24.5 dFkkoLr

हम चर्चा कर चुके हैं कि 'रात बीतने तक' नाटक ऐतिहासिक कथा पर आधारित है। किंतु यह पूरी तरह इतिहास की रचना नहीं है। यह ऐतिहासिक-साहित्यिक स्रोतों से ली गई कथा है। नंद और सुन्दरी की कथा संस्कृत और पालि साहित्य में मिलती है उन्हीं से आधार लेते हुए अश्वघोष ने 'सौन्दरनंद' नामक काव्य की रचना की थी। मोहन राकेश ने 'सौन्दरनंद' का आधार ग्रहण करते हुए पहले 'सुन्दरी' नामक कहानी लिखी थी (जिसकी चर्चा इस इकाई के आरंभ में की जा चुकी है) बाद में यह रेडियो नाटक लिखा। अश्वघोष और राकेश दोनों ने ही अपने-अपने समय और समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप इस ऐतिहासिक कथा में परिवर्तन किया। इस तरह इतिहास में कल्पना के समावेश ने इस कथानक को सर्जनात्मक और मानवीय संवेदना से सम्पन्न बनाया है। परिणामस्वरूप 'रात बीतने तक' की कथावस्तु ऐतिहासिक होते हुए भी पुरानी नहीं, हमारे आज के समय की प्रतीत होती है। घटनाएँ पुरानी हैं, परिवेश प्राचीन समय का किंतु संवेदना समकालीन प्रतीत होती है। आइए, इसके कथावस्तु विकास पर विचार करें।

मूलतः 'रात बीतने तक' नाटक रेडियो पर प्रस्तुति के लिए लिखे जाने के कारण इसमें दृश्य विभाजन नहीं है। दृश्य प्रभाव उत्पन्न करने के लिए समुचित मंच-संकेत इस नाटक में दिए गए हैं, समय-संकेत भी हैं। यदि कोई चाहे तो इसे मंच पर भी प्रस्तुत कर सकता है क्योंकि दृश्य-श्रव्य प्रस्तुतियाँ एक दूसरे से नितांत भिन्न नहीं होती।

नाटक का आरंभ सुन्दरी और उसकी परिचारिका अलका की बातचीत से होता हैं उनकी बातचीत से पता चलता है कि गौतम बुद्ध कपिलवस्तु आए हुए हैं और पूरा नगर उनका

उपदेश-संदेश सुनने को उमड़ पड़ा है। उनके प्रति आस्था और सम्मान तो है ही उनका संदेश लोगों को अपनी सांसारिक जीवन शैली से विमुख कर रहा है, और वे गौतम बुद्ध का अनुसरण करना चाहते हैं। लेकिन रानी सुन्दरी और राजा नंद जीवन को भरपूर जीना चाहते हैं। सुन्दरी बुद्ध के संदेश में निहित निर्वाण, मोक्ष, अमरत्व जैसे शब्दों का उपहास करती हुई यह सिद्ध करना चाहती है कि बुद्ध के जीवन में प्रेम और रूप के आकर्षण के अभाव ने उन्हें वैराग्य की ओर मोड़ दिया और ऐसा इसलिए हुआ कि यशोधरा में नारीत्व के आकर्षण का अभाव था जिसकी परिणति गौतम बुद्ध के संन्यास में होती ही थी।

अलका के लिए यह बात असह्य है क्योंकि इससे यशोधरा और गौतम बुद्ध दोनों का अपमान होता हैं। किंतु सुन्दरी कपिलवस्तु के लोगों की भावना और मनोदशा की परवाह नहीं करती। गौतम बुद्ध के आगमन के प्रभाव से उत्पन्न वैराग्य के परिवेश को वह उत्सव के उल्लास, प्रेम और रूप के आकर्षण द्वारा निष्प्रभाव करना चाहती है। स्थिति का विरोधाभास यह है कि पूरा नगर अगले दिन सवेरे सामूहिक रूप से बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने को तैयार है किन्तु नंद और सुंदरी उसी रात कामोत्सव का आयोजन कर अपने प्रेम को संगीत-नृत्य के सौंदर्य और भोग-विलास के साधनों द्वारा प्रगाढ़ बनाना चाहते हैं। लोक भावना के विरुद्ध अपनी आकांक्षा को स्थापित करना चाहते हैं। चूंकि वे राजन वर्ग के हैं, समर्थ हैं, अतः अनुचरों को तो उनकी आज्ञा माननी ही है। सुन्दरी को अपने रूप का गर्व है। उसे विश्वास है कि उसका जीवन पात्र प्रेम से इसी तरह भरा रहेगा; नंद उसके रूप के आकर्षण में इसी तरह डूबा रहेगा और महसूस करता रहेगा कि *''पायल, मदिरा और सुन्दरी– इनसे आगे सब शून्य है''*।

किंतु उनका विश्वास और आकांक्षा बहुत जल्दी ही बिखरने लगते हैं। कामोत्सव के आयोजन के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत कर रही नर्तकी चंद्रिका का हृदय धीरे-धीरे विरक्त होने लगता है उसकी नृत्य-गति में शिथिलता आने लगती है। नंद और सुंदरी उससे मदिरा का सेवन कर पुनः उत्साहपूर्वक नृत्य के लिए प्रेरित करते हैं किंतु चंद्रिका अपनी विवशता व्यक्त करती है। वे दोनों इसे अवज्ञा समझ कर सख्ती से कहते हैं कि उसकी कला का मूल्य दिया जा चुका है अतः उसे सवेरा होने तक नाचना होगा, नहीं तो उसके जीवन की खैर नहीं है। इस तरह की बातों से आहत चंद्रिका फिर से नाच आरंभ तो करती है किंतु उसके घुंघरुओं का स्वर मधुर नहीं, तीखा और उद्धत हो उठता है। दूर से बौद्ध भिक्षुओं का स्वर *''बुद्धं शरणम् गच्छामि''* सुनाई देता है जिसकी ध्वनि चंद्रिका के नृत्य में शिथिलता पैदा करती है। नृत्य जारी रखने के नंद के आदेश के बावजूद चंद्रिका का नृत्य रोक कर भिक्षुओं के स्वर में स्वर मिलाती हुई *''बुद्ध शरणं गच्छामि......................'* का उच्चारण करने लगती है।

सुन्दरी के विरोध के बावजूद चंद्रिका के मुख से वही शब्द निकलते रहते हैं। तभी अलका आकर खबर देती है कि भिक्षु मंडली में स्वयं गौतम बुद्ध द्वार पर भिक्षा के लिए आए थे। थोड़ी देर रुके, किंतु भिक्षा सामग्री जुटाने में देर होने के कारण आगे चले गए। स्वयं बुद्ध के भिक्षाटन के लिए आने की खबर सुनकर चंद्रिका का मन खुशी से भर जाता है और वह नंद और सुन्दरी को अंतिम नमस्कार करती हुई चली जाती है।

नंद इन सभी घटनाओं को देखते हुए भी अनदेखा करने का प्रयास करना चाहता है। तभी अचानक उसके अपने अंतर्मन में मानो प्रतिरोध होता है। एक अव्यक्त घृणास्पद हास्य का शब्द सुनाई देता है जो उसके अपने कण्ठ से निकला प्रतीत होता है।

मानो उसकी अपनी अंतरात्मा घृणा और व्यंग्यपूर्वक कह रही है : *''नीच! लम्पट! कामी!''* सुंदरी भरपूर प्रयास करती है कि नंद इस अंतर्द्वंद्व से मुक्त हो किंतु नंद की आत्मा की कचोट उसको भीतर-बाहर से घेर लेती है उसे चारों ओर यही उदासी और कभी न खत्म होने वाला अंधकार दिखाई देता है।

इतने में सवेरे के मंगलवाद्यों की आवाज़ नगर में गूँज उठती है और नंद के सुप्त हृदय को मानो जगा देती है। उसे अहसास होता है कि कामना के उत्सव की रात मनाने की प्रक्रिया में उससे भारी भूल हो गई है। द्वार पर आए गौतम बुद्ध को उसके घर से न तो भिक्षा मिल पाई और न ही वह स्वयं उनका स्वागत करने द्वार पर पहुँचा। अपनी भूल सुधार के लिए बुद्ध से नदी तट पर मिलने जाना चाहता है। सुन्दरी के रोकने पर नहीं रूकता। सुंदरी उससे जल्दी लौटने

का आग्रह करती है। उसे वचन देकर नंद चला जाता है। उसका जाना सुन्दरी में खीज और हताशा पैदा करता हैं नंद के लौटने में देरी सुन्दरी के मन में भय पैदा करती है कि पता नहीं जीवन की दिशा आगे क्या होगी। वह अपना विश्वास सहेजने की पूरी कोशिश करती है तभी भिक्षुओं की मंडली का स्वर फिर से सुनाई देता है। खीज और चिढ़ से भर वह गौतम बुद्ध के निर्वाण को पाखंड बताती हुई कहती है कि *’’मैं अपने हाथ से उन्हें भिक्षा दूँगी।’’* भिक्षुओं का दल पास आने पर अलका ध्यान दिलाती है कि राजकुमार नंद स्वयं भिक्षा पात्र लिए उन भिक्षुओं के साथ आ रहे हैं। नंद में इतना शीघ्र परिवर्तन सुन्दरी के लिए कल्पनातीत है। वह उसको भिक्षु रूप में देखकर हक्की-बक्की रह जाती है। अव्यवस्थित होकर नंद से सवाल करती है। किंतु जब नंद उसे रूप, गर्व और सुख कामना को त्याग कर भिक्षुणी बनने को प्रेरित करता है तो समग्र स्थिति परिवर्तन से भौचक्की और अव्यवस्थित सुन्दरी मज़बूर होकर भिक्षुओं के स्वर में स्वर मिला उठती है– *’’धम्मं शरणंyyyy।’’*

ckk/k iz'u

5. रेडियो नाटक अन्य नाटकों से किस रूप में भिन्न होता है?

6. ’रात बीतने तक’ नाटक किन प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्रों की चर्चा करता है?

7. क्या यह एक ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित नाटक है?

8. इसमें किस प्रसिद्ध संस्कृत लेखक की किस रचना का आधार लिया गया है?

9. ’रात बीतने तक’ की कथावस्तु में आकस्मिक मोड़ कहाँ आता है?

24-6 pfj=-fp=.k

रेडियो नाटक ’रात बीतने तक’ में कुल 4 पात्र हैं –सुन्दरी और नंद प्रमुख भूमिका में हैं और अलका तथा चंद्रिका सहायक पात्र हैं। चूँकि नाटक मूलतः रेडियो पर प्रस्तुति के लिए लिखा गया है अतः नाटक के आरंभ में पात्र परिचय नहीं दिया गया है। सभी पात्र नाटक में अपनी भूमिका के माध्यम से अपना परिचय देते हैं। आगे हम इन पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं की चर्चा करेंगे।

24-6-1 lqUnjh

'रात बीतने तक' रेडियो नाटक नायिका केंद्रित नाटक है। इसकी प्रधान पात्र सुन्दरी है यानी उसके कार्य और मनःस्थितियां नाटक के कथानक की विभिन्न घटनाओं का आधार बनते हैं। सुन्दरी को अपने रूप सौंदर्य पर अपार गर्व है। वह मानती है कि इस सौंदर्य का आकर्षण नंद को कभी उसके प्रेम से विमुख नहीं होने देगा। उसकी सबसे बड़ी आकांक्षा प्रेम को भरपूर जी लेने की है। इसके लिए वह सभी साधन जुटाने का भरसक प्रयास करती है। गौतम बुद्ध के प्रभाव से जब संपूर्ण नगर विराग की लहर में खोया हुआ है तब सुन्दरी भोग-विलास के समस्त साधन जुटाकर कामोत्सव का आयोजन करती है ताकि उसका अपना जीवन गौतम बुद्ध के आगमन से निर्मित विराग के परिवेश और प्रभाव से दूर रह सके।

अपने रूप आकर्षण के आत्म-विश्वास में वह गौतम बुद्ध के संदेश के प्रति उपेक्षापूर्ण भाव रखते हुए उनका मज़ाक उड़ाती है; उनके और यशोधरा के संबंध में अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल भी कर देती है।

> **lqUnjh %** *उन्होंने कामदेव को परास्त किया है? (हँसती है। फिर गम्भीर होकर) यह झूठ है अलका! कोरा झूठ। वास्तव में गौतम बुद्ध को गौतम बुद्ध बनाने का श्रेय देवी यशोधरा को है।*
>
> **vydk %** *हाँ-हाँ देवी यशोधरा को ही। जानती हो किस तरह? उसके नारीत्व में इतना आकर्षण नहीं था कि वह राजकुमार सिद्धार्थ को अपने पास बांध कर रख सकती। यदि यशोधरा यशोधरा न होकर, सुन्दरी होती तो।*

वास्तव में सुन्दरी का आत्मविश्वास दंभ की सीमा तक पहुँच जाता है। उसे ध्यान नहीं रहता कि उसका कामोत्सव आयोजन का प्रयास वास्तव में लोकमत से पलायन का ही एक रूप है, धारा के विरुद्ध बहना है। यही कारण है कि अपनी अनुचरी अलका और नर्तकी चंद्रिका की बुद्ध के प्रति आस्था को भी वह पहचान नहीं पाती। अलका को नासमझ कहकर उसकी बात टालने का प्रयास करती है और चंद्रिका को अवज्ञा के लिए दंड देने की धमकी देती है। कलाकार की भावना के प्रति सम्मान की बजाय मालिक-सेवक जैसा व्यवहार करती है।

कलाकार और उसकी कला के प्रति उसका अवमाननापूर्ण व्यवहार वास्तव में उसके अंहकार और कलाभिरुचियों के अभाव का सूचक है। अपने रूप और राजसी भोग-विलास की क्षमता को लेकर सुन्दरी का अभिमान इतना पक्का है कि वह सोच ही नहीं सकती कि स्थिति बदल भी सकती है। नंद के हृदय में उसके अलावा गौतम बुद्ध के लिए भी स्नेह और सम्मान हो सकता है यह उसकी कल्पना के बाहर है। भिक्षु मंडली और उसके साथ गौतम बुद्ध के द्वार पर आने और भिक्षा पाए बगैर लौट जाने की बात सुनकर भी उस पर कोई खास असर नहीं होता। चंद्रिका बुद्ध के आगमन की सूचना से आनंद विभोर हो कर चली जाती है। नंद इस पूरी परिस्थिति से विचलित हो उठता है। पूरी चेतना से जब वह सुन्दरी के प्रेम पाश में बँधा रहना चाहता है तभी उसके अंतर्मन में एक तरह का विद्रोह हो उठता है। किन्तु सुन्दरी को अपने रूप गर्व पर फिर भी मिथ्या दम्भ है। वह सोचती है कि नंद उसके आकर्षण में सदैव ही बँधा रहेगा।

नंद के चले जाने पर उसे अपना भरोसा टूटता प्रतीत होता है और वह खीजे हुए बच्चे का-सा व्यवहार कर उठती है। क्रोध में चीज़ें उठाती-पटकती है, फूल-मालाएँ नोचती-फेंकती है, अलका को आदेश देती है कि तुंरत उसे अकेला छोड़ दे। वास्तव में उसका आत्मविश्वास टूटता है। उसके मन में भय पैदा हो गया है कि कुछ अवांछित न घटित हो जाय– कहीं नंद भी गौतम बुद्ध के प्रभाव में आकर उससे विरक्त न हो जाए। नंद को लौटने में देरी होने पर तरह-तरह की शंकाएँ उसके मन में उठती हैं जिन्हें वह प्रकट नहीं करना चाहती। फिर भी, वह अपने आप से जूझती प्रतीत होती है। उसके मन में रह-रहकर सवाल उठता है :

> *''आज तक कभी नहीं हुआ कि उन्होंने मुझे वचन दिया हो और उसका पालन न किया हो····ओह! मैं कितनी देर से इस विशेषक को गीला रखने का प्रयत्न कर रही हूँ और यह कितनी जल्दी सूखता जा रहा है····वह नहीं आएँगे? नहीं आएँगे तो क्या होगा?····जीवन किस दिशा में जाएगा? मेरा विश्वास किस दिशा में जाएगा?····यह भला संभव है कि वह*

नहीं आए? परंतु हृदय बैठता क्यों जा रहा है? क्यों प्रतीत होता है कि मैं अथाह सागर में डूब रही हूँ? नहीं-नहीं मुझे अपने आप को उबारना होगा। मुझे अपने विश्वास को सहारा देना होगा। परंतु कैसे? किस आश्रय से?''

अपने विश्वास से डगमगाई हुई सुन्दरी अब भी अपने रूप और शक्ति के मद में डूबी है। जब भिक्षुओं का स्वर समीप आता सुनाई देता है तो वह चिढ़ कर कहती है :

> *''फिर वही स्वर! वह भिक्षुओं की मंडली फिर इस ओर आ रही है?''''भिक्षा के लोभी! ''''इन्हें यहाँ से क्या भिक्षा चाहिए? ¼0;X;i.k Loj e½ गौतम बुद्ध! भिक्षुओं के सम्राट! ''''मैं भी तो देखूँ कि यह निर्वाण का पाखंड क्या है? ''''ठहर, अलका!'''' यह भिक्षा की थाली मुझे दे। मैं अपने हाथ से इन्हें भिक्षा दूँगी।''*

उसके यह संवाद उसके भय, अंहकार और अपने से भिन्न विचार रखने वाले व्यक्ति का अपमान करने की प्रवृत्ति प्रकट करते हैं। वह अपने अहं को सर्वोपरि रखते हुए गौतम बुद्ध को नीचा दिखाने का प्रयास करती है। किन्तु जब वह देखती है कि राजकुमार नंद स्वयं भिक्षु वेश में सामने खड़े हैं तो उसे समझ में नहीं आता कि क्या किया जाय। उसे अपने आप पर भरोसा नहीं रहता। वह नंद से सहारा माँगती है। नंद के कहने पर कि अपना दम्भ, अपनी कामना, अपने भीतर का अहंकार सब कुछ भिक्षा पात्र में डाल दे।

> *''सहारा लेने के लिए स्वयं आगे बढ़ो, सुन्दरी! भिक्षुओं के शब्दों के साथ शब्द मिलाओ''*

> वह अपनी इच्छा, अपने उत्साह से नहीं, परिस्थिति के दबाव से अनिश्चित से स्वर में बोलती है : *''धम्मं शरण''''*

इस तरह गर्व चूर होने पर भी सुन्दरी सहज नहीं हो पाती। हम देखते हैं कि वह अपने अहंकार को त्यागकर बुद्ध की शरण में नहीं गई, उसने विवश होकर असहाय अवस्था में *''बुद्धं शरणं गच्छामि''* को स्वीकार किया है।

भोग-विलास की अपार आकांक्षा के अतिरिक्त सुन्दरी के व्यक्तित्व का एक और पक्ष है सामंतीय दंभ। नर्तकी चंद्रिका से उसका व्यवहार इसी दंभ को प्रगट करता है। चंद्रिका अगले दिन प्रातः दीक्षा ग्रहण करने वाली है अतः कामोत्सव की रात को लंबे समय तक नृत्य के पश्चात वह मुक्त होना चाहती है। सुन्दरी उसके मनोभाव को समझने की बजाय अपने आक्रोश को बहुत ही तुच्छ और दंभपूर्ण ढंग से प्रकट करती है–

lqUnjh % *राजकुमार के आदेश का पालन आवश्यक है, चंद्रिका! तुझे इस समय नाचना ही होगा।*

pafnzdk % *यदि चरणों में गति न आए, बाँहों में कम्पन न हो, तो भी?*

lqUnjh % *हाँ, तो भी नाचना होगा। तेरे चरणों की गति और तेरी बाँहों का कम्पन आज तेरा नहीं है। तुझे उसका मूल्य दिया जा चुका है। आज रात के अंत तक तेरी कला बिकी हुई है। नाच! अभी प्रभात होने तक तू एक खरीदी हुई नर्तकी है। जीवन का कुछ भी मोह है, तो तुझे अवश्य नाचना होगा।''*

यह किसी कला प्रेमी व्यक्ति का संवाद न होकर अपने अधिकार और शक्ति के अहंकार में चूर ऐसे व्यक्ति का संवाद प्रतीत होता है जो कला का मूल्य चुकाकर उसे खरीद लेने का दावा कर रहा है।

24-6-2 uan

'रात बीतने तक' नाटक का एकमात्र पुरुष पात्र राजकुमार नंद है। नाटक में केंद्रीय भूमिका सुन्दरी की है किंतु नंद भी इसका प्रधान पात्र है क्योंकि सुंदरी का संपूर्ण व्यक्तित्व नंद के इर्द-गिर्द घूमता है। वह नंद के साथ सुख साधन सम्पन्न राजसी जीवन जीना चाहती है। नंद स्वयं सुन्दरी के प्रति अत्यधिक आकृष्ट हैं। सुन्दरी के कामोत्सव आयोजन में वह इस तरह मग्न है कि *''पायल, मदिरा और सुन्दरी''* के सिवाय कुछ भी नहीं देखना-सुनना चाहता। नर्तकी के

घुँघरूओं की आवाज शिथिल होते ही वह बार-बार उससे नाचने के लिए आग्रह करता है, नृत्य और मदिरा के मादक वातावरण में अपने को सराबोर रखना चाहता है।

किन्तु उसके व्यक्तित्व का दूसरा पक्ष भी है। वह सुन्दरी की तरह दंगी स्वभाव का नहीं है। अधिकार जमाने की प्रवृत्ति उसमें नहीं है। भिक्षु मंडली के द्वार से लौट जाने की घटना उसे बहुत गहराई से प्रभावित करती है। अपने भोग-विलास के स्वभाव के अनुरूप वह यह तो कह देता है *''जो कुछ इस घर में है, सब भिक्षा में दे दो—एक सुन्दरी को छोड़कर''* किन्तु उसका अंतर्मन उसे धिक्कारता है। उसे लगता है कि भीतर से कोई व्यंग्य कर रहा है *''नीच! लम्पट! कामी!''* मानो उसकी अंतरात्मा उसे धिक्कारती हुई व्यंग्यपूर्ण तिरस्कार से हँस रही हो। उसे जब पता लगता है कि गौतम बुद्ध द्वार पर पहुँचे और बिना किसी प्रकार के स्वागत और आतिथ्य के, बिना भिक्षा पाए वापस लौट गए तो उसका मन दुखी हो जाता है। उसे अपराध बोध होता है कि भोग-विलास में वह ऐसा डूब गया कि सामान्य शिष्टाचार की भी सुध नहीं रही। वह अपने आप को इस बात के लिए क्षमा नहीं कर पाता कि कपिलवस्तु का पूरा जनसमाज जिन गौतम बुद्ध का उपदेश सुनने के लिए उत्साह से उमड़ा पड़ता है वही बुद्ध उसके द्वार पर आए और वह उनके स्वागत के लिए नहीं गया। इस ग्लानि से उसे बहुत क्लेश होता है।

उसका विवेक जागता है कि अब गौतम बुद्ध दोबारा तो उसके द्वार पर नहीं आएँगे। अपनी भूल सुधारने के लिए उसे स्वयं उनके पीछे जाना चाहिए और क्षमा याचना करनी चाहिए। सुन्दरी की इच्छा के विपरीत नंद वहाँ जाता है और वहाँ भिक्षु वेश में लौटता है भिक्षुओं की मंडली के साथ। उसके जीवन में इतना बड़ा परिवर्तन-गृहस्थ जीवन से विराग और संन्यास ग्रहण की घटना इतनी जल्दी और आकस्मिक ढंग से घटित होती है कि जिज्ञासा और कुतूहल पैदा होता है। अलका और सुन्दरी इस कल्पनातीत परिवर्तन को देखकर भौचक्की रह जाती हैं। सुन्दरी को जबरदस्त झटका लगता है। किन्तु नंद बहुत शांत, स्थिर और आश्वस्त रहते हुए सुन्दरी को भी अपने गर्व और कामना के अंधकार से बाहर निकलने का रास्ता दिखा देता है। इस तरह नंद का व्यक्तित्व संवेदनशील और परिवर्तनशील व्यक्ति का है आत्मकेन्द्रित व्यक्ति का नहीं।

24-7 ifjo'k

'रात बीतने तक' ऐतिहासिक-सांस्कृतिक नाटक है। इसका घटना व्यापार वसंत ऋतु की एक रात का है। एक ओर, राज परिवार के दम्पति सुन्दरी और नंद के आनंद-उल्लास पूर्ण जीवन के वैभव का परिवेश है तो, दूसरी ओर, गौतम बुद्ध के संदेश के प्रसार का। बुद्ध ने जन-जन के मन में गहरा विश्वास और आस्था कायम कर ली है यह बात चंद्रिका और अलका के संवादों और व्यवहार से प्रकट होती है। चंद्रिका दीक्षा ग्रहण करने वाली है अतः उसके नृत्य में उत्साह और लय के स्थान पर शिथिलता आने लगती है। अलका नदी तट पर बौद्ध भिक्षुओं के शिविर में देखकर आई है कि हर कोई बुद्ध के उपदेश सुनने को उमड़ा चला आ रहा है।

नाटक में दो विरोधी स्थितियों की टकराहट दिखाई गई है। एक ओर, सुन्दरी कामोत्सव आयोजन कर सुख कामनाओं की पूर्ति में अनुकूल वातावरण बनाने का हर सम्भव प्रयास करती है। दूसरी ओर, गौतम बुद्ध हैं जिन्होंने कामदेव को जीत कर निर्वाण पद प्राप्त कर लिया है। सुन्दरी बुद्ध की महत्ता को स्वीकार नहीं करना चाहती क्योंकि यह उसकी अपनी जीवन दृष्टि के प्रतिकूल बैठती है। अतः उसका मानना है कि यशोधरा का रूप आकर्षण और प्रेम गौतम बुद्ध को बाँधने में असफल रहा हैं। असलियत यह है कि सुंदरी वास्तविकता से अनभिज्ञ और अपने भ्रमपूर्ण सोच की शिकार है।

गौतम बुद्ध के द्वार पर आने की खबर सुनकर नंद के हृदय में हुआ परिवर्तन दो भिन्न दृष्टियों की टकराहट का परिवेश उत्पन्न करता हैं। सुन्दरी के प्रेम में पूरी तरह बंधे नंद की जीवन दृष्टि गौतम बुद्ध के पास जाने के बाद पूरी तरह बदल जाती है। वह स्वयं भिक्षु वेश में लौटता है और सुंदरी को भी राजसी सुख सुविधापूर्ण जीवन त्याग कर भिक्षुणी बनने की प्रेरणा देता है।

इस तरह नाटक बुद्धकालीन समाज के परिवेश (देशकाल) की वास्तविकताओं को बड़ी सर्जनात्मकता के साथ चित्रित करता है। नाटक में घटित घटना इतिहास की कसौटी पर पूरी तरह खरी हो अथवा न हो, इतिहास-संभव घटना अवश्य प्रतीत होती है। गौतम बुद्ध के संदेश के व्यापक प्रसार के ऐतिहासिक तथ्य को यह नाटक बखूबी उजागर करता है।

24-8 l¡jpuk-f'kYi

'रात बीतने तक' मोहन राकेश का रेडियो नाटक है, जिसे सफलतापूर्वक रेडियो पर कई बार प्रसारित किया जा चुका है। बौद्ध काल की कथावस्तु होने के कारण इसकी भाषा उस युग के अनुरूप है। इस भाग में नाटक की भाषा, शैली और संवाद पर विचार किया गया है।

Hkk"kk

'रात बीतने तक' की भाषा पर विचार करते हुए हमें ध्यान रखना होगा कि यह ऐतिहासिक-सांस्कृतिक कथ्य पर आधारित रेडियो नाटक है। ऐतिहासिक यानी बीते हुए समय और समाज को जीवंत ढंग से निरूपित करने में भाषा की बड़ी भूमिका होती है। यह भी कहा जा सकता है कि उस ऐतिहासिक परिवेश की सृष्टि भाषा के माध्यम से ही संभव होती है जिसके द्वारा हम वर्तमान में रहते हुए अतीत की यात्रा कर लेते हैं। पुरानी घटनाओं को तदयुगीन पात्रों के कार्यों द्वारा प्रस्तुत करते हुए तदयुगीन भाषिक परिवेश की सृष्टि की जाती है। शब्दावली चयन और अभिव्यक्ति शैली दोनों के द्वारा यह संभव बनाया जाता है। प्राचीन भारतीय इतिहास को, राजपरिवार को दिखाने के लिए संस्कृत की तत्सम शब्दावली और राजसी साज-सज्जा की सहायता ली जाती है।

'रात बीतने तक' में 'प्रकोष्ठ' 'अलिंद', 'वर्तुलाकार' 'गवाक्ष', 'आस्तरण'', 'उपधान'', ''मधुमास'', 'निद्रिता'', ''चंदन लेप', 'विशेषक' आदि जैसे शब्दों से राजमहल के भीतर के परिवेश की प्रस्तुति में सहायता मिली है। वहीं भिक्षाटन करते हुए बौद्ध भिक्षुओं के ''बुद्धं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। संघं शरणं गच्छामि'' के समवेत स्वर में उच्चारण से गौतम बुद्ध के संदेश के प्रसार का परिवेश निर्मित होता है।

ऐतिहासिक रचना की विशेषता यह होती है कि वह मात्र इतिहास नहीं होती। इतिहास की वर्तमान में प्रस्तुति होती है। पढ़ने-देखने वाला मौजूदा समय का समाज है जो अतीत को महसूस करना चाहता है। उसकी यात्रा करना चाहता है किंतु उसकी संवेदना वर्तमान की होती है। अतः ऐतिहासिक रचना की भाषा अतीत और वर्तमान के बीच सेतु का काम करती है। इस तरह वाक्य संरचना, लहजा, कथन शैली आदि आज के समय से जुड़े होने अपेक्षित होते हैं। कहने का तात्पर्य है कि ऐतिहासिक कथ्य होते हुए भी रचना में पुरानेपन का अहसास न होकर वर्तमान समय की ताजगी का अहसास होना चाहिए।

यह बात थोड़ी विरोधाभासपूर्ण लग सकती है लेकिन यदि आप थोड़ा-सा ध्यान देंगे तो समझ जाएँगे। 'रात बीतने तक' की भाषा पर ही ध्यान देंगे तो पाएँगे कि यहाँ तत्सम शब्दावली के प्रयोग के बावजूद आजकल की बोलचाल की भाषा की रवानगी है। यह नाटक मूलतः रेडियो पर प्रस्तुति के लिए लिखा गया है। अतः दृश्य की अपेक्षा श्रव्य रूप में संप्रेषण का पूरा ध्यान रखा गया है। बोलचाल की वाक्य रचना की सहजता, मुहावरेदार भाषा का प्रयोग है। नाटक की मूल घटना कामोत्सव का आयोजन है इसलिए विलासपूर्ण श्रृंगार का वातावरण भाषा के माध्यम से पैदा किया गया है :

uUn % *सुन्दरी!*

lqUnjh % *राजा!*

uUn % *तुम्हारे मुख से हर बार यह शब्द नया-सा सुनाई देता है। फिर कहो*

¼lqUnjh foykl iw.kZ nf"V ls mls ns[krh gS½

lqUnjh % *राजा!*

uUn % *फिर कहो!*

lqUnjh % *कितनी बार कहूँ?*

uUn % *कहती रहो, जितनी देर रात है, जितनी देर नृत्य चलता है, जितनी देर मदिरा पात्र में मदिरा ढलती है ....।*

lqUnjh % और उसके बाद····?

uUn % उसके बाद भी। (हाथों की उंगलियाँ खोलता और बन्द करता है।) जब तक प्राणों में स्वन्दन है, शरीर में हिलोरें उठ सकती हैं और जीवन को यह उफनता हुआ सागर घेरे है।

lqUnjh % और उसके बाद ····?

¼uUn p"kd l! e|g yxk dj ,d lk|l e! ih tkrk gA fQj p"kd Q!d n!rk gA½

uUn % और उसके बाद भी। जब तुम यह कहती हो, रातों में वासंती हवा ढल जाती है, फूलों की पंखड़ियाँ खुलने के लिए छट-पटाने लगती हैं। तुम और ···· ।

सुन्दरी की भाषा में रूप यौवन का दर्प है।

> ''····मैंने कहा न, तू अभी बहुत भोली है। अलका, नारी का आकर्षण क्या कर सकता है, यह तू नहीं समझ सकती। यशोधरा भी नहीं समझ सकी। ज्वाला क्या कर सकती है, यह या ज्वाला जानती है, या वह काठ जो उसमें जलता है। तू यह कैसे जान सकती है, भोली अलका, तू जो इतनी अनजान है? जा मेरे लिए श्रृंगार का सामान ला। आज कामोत्सव की रात है। सुनंदा और विशाखा से कह कि सारे वातावरण में सुरभि धूम फैला दें। फूलों की पत्तियाँ बिछाकर शय्या की रचना कर। सब गवाक्षों को चन्दन तेल के दीपों से आलोकित कर दे।··· और सुन, चंद्रिका को संदेश भेज दे कि आज उसे सारी रात नृत्य करना होगा ।··· इन भिक्षुओं ने तो वासंती रातों का सुहाग ही छीन लिया है। जा!''

नंद और सुन्दरी दोनों में ही अपनी सत्ता की शक्ति का बोध है राजमद का अहंकार उनकी भाषा में प्रकट होता है। नर्तकी चंद्रिका को वे कलाकार के रूप में देखने की बजाय खरीदी हुई सेविका के रूप में देखते हैं –

lqUnjh % राजकुमार के आदेश का पालन आवश्यक है। चन्द्रिका! तुझे इस समय नाचना ही होगा।

pfUnzdk % यदि चरणों में गति न आए, बाँहों में कम्पन न हो, तो भी?

lqUnjh % हाँ, तो भी नाचना होगा। तेरे चरणों की गति और तेरी बाँहों का कम्पन आज तेरा नहीं है। तुझे उसका मूल्य दिया जा चुका है। आज रात के अंत तक के लिए तेरी कला बिकी हुई है। नाच! अभी प्रभात होने तक तू एक खरीदी हुई नर्तकी है। जीवन का कुछ भी मोह है, तो तुझे अवश्य नाचना होगा।''

दूसरी ओर राजमहल के उत्सव उल्लास की आकांक्षा के विपरीत जनजीवन में बुद्ध के संदेश के प्रति आस्था और सांसारिक सुख के प्रति वैराग्य और राजाज्ञा के प्रति उपेक्षा की भाषा दिखाई देती है।

क) vydk % आपने प्रजा के बच्चे-बूढ़ों का उत्साह नहीं देखा, राजकुमारी। वे गौतम बुद्ध का उपदेश सुनने के लिए इस तरह उमड़ पड़ते हैं जैसे कोई निधि प्राप्त करने जा रहे हों।

ख) 1) pfUnzdk % मुझे जिस जीवन का मोह है, राजकुमारी, वह दिन और घड़ियों में बंटा हुआ जीवन नहीं है। उस मोह के लिए आप मुझे नहीं नचा सकतीं। परंतु मैं आपके दिए हुए मूल्य का दावा मानती हूँ।

2) pfUnzdk % नहीं, राजकुमारी! मैं और नहीं नाच सकती। नाचना केवल शरीर की कला नहीं है। अब थोड़ी ही देर में प्रभात होने वाला है। मेरा मन है कि मैं एक प्रहर आँखें मूँद कर चुपचाप बैठी रहूँ। प्रभात होने पर आज मुझे दीक्षा ग्रहण करने के लिए जाना है।

अंत में नंद का हृदय परिवर्तन, दीक्षा ग्रहण बुद्ध के प्रभाव की चरम सीमा प्रकट करता है।

uUn % तुम बहुत कुछ दे सकती हो सुन्दरी! तुम्हें अपने रूप पर गर्व है न! आज वह गर्व इस भिक्षा पात्र में डाल दो। तुम्हें अपनी सुख कामना ही सबसे बड़ी कामना प्रतीत

होती है न? आज उस कामना को भी भिक्षा में दे डालो। मैंने अपने अंतर का अंधकार गौतम बुद्ध के भिक्षापात्र में डाल दिया है। तुम अपने अंतर का अंधकार मेरे भिक्षापात्र में डाल दो।''

ऊपर के उदाहरणों से स्पष्ट है कि परिवेश की सृष्टि के लिए भाषा को विषयानुरूप बनाने का भरपूर प्रयास किया गया है, वहीं संप्रेषणीयता की सहजता के लिए मुहावरों का सहज सार्थक उपयोग किया गया है कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

- *''मनुष्य* lqnj 'kCnk dh [kky *में अपने अभावों को ढकने का प्रयास करता है।''*
- *''यह उत्साह तो* n/kQu dk mcky *है।* pkj fnu jgxk, *फिर शांत हो जाएगा।''*

'kyh

'रात बीतने तक' नाटक राजकुमार नंद के विलासपूर्ण जीवन के संन्यास में परिवर्तन की घटना को केंद्र बनाकर लिखा गया है। दीक्षा ग्रहण की स्थिति एक आकस्मिक परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत की गई है। कथावस्तु का सम्पूर्ण विन्यास बहुत नाटकीय और व्यंग्यात्मक शैली में किया गया है–कामोत्सव की रात का प्रभात दीक्षा-ग्रहण में हुआ है। व्यंग्य की सृष्टि भाषा और स्थिति-परिस्थिति दोनों के माध्यम से इस प्रकार की गई है कि नाटक कथावस्तु की परिणति स्थिति-परिवर्तन की चरम सीमा में होती है। कामोत्सव की रात का अवसान, सुबह के दीक्षा ग्रहण में होता है व्यंग्यपूर्ण भाषा का इस्तेमाल कई युक्तियों के रूप में किया गया है। (क) गौतम बुद्ध का उपहास करती हुई सुंदरी सीधे-सीधे व्यंग्य करती है :

lUnjh ¼ 1) (हंसती हुई) *''निर्वाण, मोक्ष और अमरत्व ! .... बस इतना ही? और भी तो बता, अलका, कि नदी तट से क्या-क्या उपदेश सुनकर आयी है?''*

2) *''फिर वही स्वर! यह भिक्षुओं की मंडली फिर इस ओर आ रही है? ....भिक्षा के लोभी!.... इन्हें यहाँ से क्या भिक्षा चाहिए? (व्यंग्यपूर्ण स्वर में) गौतम बुद्ध भिक्षुओं के सम्राट! मैं जाकर उनके पात्र में भिक्षा डालती हूँ।.... मैं भी तो देखूँ कि यह निर्वाण का पाखंड क्या है?''*

3) क)' *'ठहर, अलका!.... यह भिक्षा की थाली मुझे दे। मैं अपने हाथ से उन्हें भिक्षा दूँगी।''*

ख) व्यंग्य का दूसरा रूप परिस्थितिपरक है। सुख कामनाओं में लिप्त नंद और सुन्दरी भरपूर प्रयासों के बावजूद परिवेश के बदलाव से अछूते नहीं रह पाते। नंद की अंतरात्मा उस पर व्यंग्यपूर्ण ढंग से हंसती है। उसे अहसास होता है कि वह *''नीच! लम्पट! कामी!''* है तभी वह द्वार पर आए गौतम बुद्ध का स्वागत करने से चूक गया है। उसे अपने अंतःकरण में भयानक अधंकार व्याप्त प्रतीत होता है जिससे वह भयभीत होता है।

ग) व्यंग्य का एक अन्य रूप सुन्दरी की परिस्थिति में निहित है। वह संपूर्ण लोक समाज की उपेक्षा करती हुई अपने रूप-यौवन और कामोत्सव आयोजन के माध्यम से वक्त की हवा को बदल डालने का दम भरती है किंतु बिडंबना है कि उसका अपना विश्वास ही डगमगा जाता है।

इस तरह यहाँ व्यंग्यात्मकता भाषा, भाव और परिस्थिति तीनों ही स्तरों पर दिखाई देती है।

lokn

'रात बीतने तक' के संवाद पात्रों की मनःस्थिति और कार्यव्यापार के अनुकूल है। उनमें अचानक पैदा हाने वाले परिवर्तन को संवाद बखूबी अभिव्यक्त करते हैं। रेडियो नाटक में सब कुछ संवादों के माध्यम से ही प्रस्तुत किया जाता है दृश्य का अहसास भी ध्वनि और संवाद द्वारा कराया जाता है। नंद, सुन्दरी, अलका और चंद्रिका के संवाद उनके गुण स्वभाव और मनःस्थिति की अभिव्यक्ति के साथ ही पूरे नगर की मनःस्थिति को उजागर करते हैं। उनमें सपाट बयानी अथवा विवरण नहीं है बोलचाल की लय और तार्किक चुटीलापन है :

lUnjh ¼ हँसती हुई) निर्वाण, मोक्ष और अमरत्व!.... बस इतना ही? और भी तो बता, अलका, कि नंदी तट से क्या-क्या उपदेश सुनकर आई है?

vydk % *यह हँसने की बात नहीं है, राजकुमारी! आप स्वयं चलकर उनके मुँह से सब सुनें तो····!*

lqUnjh % *तो मुझे वहाँ भी हँसी आये बिना न रहेगी। मनुष्य कितने सुंदर शब्दों की खाल में अपने अभावों को ढकने का प्रयत्न करता है! और तेरे जैसे भोले लोग, अलका, हर शब्द पर विश्वास कर लेते हैं।*

vydk % *मैं भोली सही, राजकुमारी! पर कपिलवस्तु के सब लोग तो भोले नहीं!*

lqUnjh % *भोले नहीं तो वे पागल हैं। वे स्वयं सोचना नहीं जानते।*

vydk % *आपने प्रजा के बच्चे-बूढ़ों का उत्साह नहीं देखा, राजकुमारी! वे गौतम बुद्ध के उपदेश सुनने के लिए इस तरह उमड़ पड़ते हैं जैसे कोई निधि प्राप्त करने जा रहे हों।*

lqUnjh % *उसका कारण मैं जानती हूँ। अलका, बहुत दिन एकतार जीवन बिता कर लोग अपने-आप से ऊब जाते हैं। तब उन्हें जहाँ भी कुछ नवीनता दिखायी दे, वे उसके प्रति उत्साहित हो उठते हैं। यह उत्साह तो दूधफेन का उबाल है। चार दिन रहेगा, फिर शांत हो जायेगा।*

नंद और सुंदरी के संवाद उनकी समाज निरपेक्ष भोग लिप्सा को व्यक्त करते हैं। कार्यव्यापार को सपाट ढंग से आगे बढ़ाने की बजाय अर्थ की बहुलता की सृष्टि करते हैं। नंद और सुंदरी का चंद्रिका को नृत्य के लिए जोर देना चंद्रिका द्वारा बार-बार अनिच्छा की अभिव्यक्ति समाज की मानसिकता को प्रकट करते हैं। वही मानसिकता जो नंद के ह्रदय को परिवर्तन की ओर प्रेरित करती है।

नंद का अंतर्द्वंद्व दिखाने के लिए लेखक ने संवादों में नाटकीय युक्ति का इस्तेमाल किया है। द्वार पर गौतम बुद्ध के आने और भिक्षा के बगैर लौट जाने का गहरा असर नंद के अवचेतन मन पर पड़ता है। आतिथ्य पाए बगैर बुद्ध के लौट जाने की घटना पर उसकी अंतरात्मा जैसे उसे धिक्कार उठी हो।

इसके लिए लेखक ने दिखाया है कि नंद के कंठ से ही घृणापूर्ण हँसी और स्वयं अपने प्रति घृणा और तिरस्कारपूर्ण शब्द निकलते हैं। संवादों में शामिल यह युक्ति नंद के अंतर्द्वंद्व को प्रकट करती हुई उसे तत्परता से क्षमा मांगने के लिए उसे प्रेरित करती है। सुख कामना को पीछे छोड़ते हुए गौतम बुद्ध की शरण ग्रहण करने की घटना को स्वाभाविक बनाती है।

सुंदरी के मन की आशंका और नंद की क्षमा याचना की तत्परता प्रकट करते संवाद परिस्थिति के तनाव को स्वाभाविकता से प्रकट करते हैं–

uUn % *तुम कितनी अच्छी हो, सुन्दरी! मैं उनसे मिलकर केवल क्षमा माँगना चाहता हूँ कि यहाँ किसी ने उनका सत्कार नहीं किया। मैं बहुत शीघ्र ही लौट आऊँगा।*

lqUnjh % *नहीं, कितनी देर में आयेंगे, यह बताकर जाना होगा।*

uUn % *तुम्हीं बता दो। जितनी देर में कहोगी, लौट आऊँगा।*

lqUnjh % *देखिए उस कटोरी में चंदनलेप है?*

uUn % *हाँ, है तो सही। पर चंदनलेप का इस समय क्या होगा?*

lqUnjh % *इससे मेरे माथे पर विशेषक बनाइए।*

(क्षण-भर का व्यवधान।)

uUn % *अच्छा, लो। यह ····पूरे माथे पर विशेषक बन गया। अब?*

lqUnjh % *इस विशेषक के सूखने से पहले-पहले लौट आना होगा।''*

'रात बीतने तक' के संवाद कथा विकास में जिज्ञासा और कौतुहल की सृष्टि करते हुए नाट्य संवेदना को सम्प्रेषणीय बनाते हैं। बोलचाल की लय का निर्वाह करते हुए यह रेडियो पर श्रव्य नाट्य प्रस्तुति के सर्वथा अनुकूल हैं।

ck/k i'u

10. 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए।

क) i) सुन्दरी बहुत विनम्र है। [ ]

ii) दूसरों की भावनाओं और कार्यों का सम्मान करती है। [ ]

iii) केवल अपने आप को सही समझती है। [ ]

iv) गौतम बुद्ध और यशोधरा के प्रति ईर्ष्या और क्रोध का भाव रखती है। [ ]

v) भोग विलास से विमुख है। [ ]

vi) कलाकार का सम्मान करती है। [ ]

vii) वक्त की हवा के विपरीत रहकर जीवन को भोगना चाहती है। [ ]

ख) i) नन्द सुन्दरी से अत्याधिक प्रेम करता है। [ ]

ii) सुख-साधनों का भरपूर उपयोग करना चाहता है। [ ]

iii) नर्तकी की कला का सम्मान करता है। [ ]

iv) मदिरा की आकांक्षा नहीं रखता। [ ]

v) गौतम बुद्ध का सम्मान करता है। [ ]

vi) उनका आतिथ्य न कर पाने पर पश्चाताप करता है। [ ]

vii) गौतम बुद्ध से बिल्कुल प्रभावित नहीं होता। [ ]

viii) सुन्दरी की तरह अपरिवर्तनशील स्वभाव का है। [ ]

11. 'रात बीतने तक' नाटक में किन दो विरोधी स्थितियों की टकराहट दिखाई गई है।

....

....

....

....

....

24-9 jfM;k-iLrfr@vfHku;rk

अभिनेयता की दृष्टि से 'रात बीतने तक' पर विचार करते हुए हमें याद रखना होगा कि यह एक रेडियो नाटक है। रेडियो प्रस्तुति की दृष्टि से श्रव्य संकेतों की सावधानी लेखक ने यहाँ बरती है। इसे मंच प्रस्तुति के अनुकूल बनाते हुए आरंभ में ही लेखक ने मंच सज्जा के समय-संकेत भी दिए गए हैं। पात्रों के संवादों के साथ-साथ उनकी मनोदशा और हाव-भाव संबंधी संकेत भी दिए गए हैं। दृश्य बदलने संबंधी संकेतों में भी पर्दा उठने और मंच सज्जा का उल्लेख है, पात्रों के आवागमन संबंधी संकेत हैं। इस तरह लेखक का प्रयास रहा है कि नाटक रेडियो अथवा दृश्य दोनों ही रूप में प्रभावपूर्ण ढंग से संप्रेषणीय हो सके। चंद्रिका के नृत्य में आती शिथिलता और अनमनापन, भिक्षुओं का समवेत स्वर, नंद का अंतर्द्वंद्व, सुंदरी के आत्मविश्वास का संशय और फिर निराशा में बदलना आदि की घटनाओं को श्रव्य संकेतों द्वारा प्रभावपूर्ण बनाने का पर्याप्त विधान नाटक में किया गया है। नंद के कंठ से बार-बार अव्यक्त घृणापूर्ण हास्य का स्वर सुनाई देता उसके साथ ही आत्म-व्यंग्य के शब्द *''नीच, लम्पट, कामी''*– सुनाई देना फिर *''डूब जा अँधेरे में डूब जा''* सुनाई देना रेडियो नाटक की प्रभावपूर्ण के लिए अपनाई गई युक्ति है। कथा विकास और पात्रों के चरित्र और भाषा की दृष्टि से देखा जाए तो यह अभिनेयता की दृष्टि से एक सफल नाटक है।

24-10 eY;kdu

'रात बीतने तक' नाटक का आपने वाचन कर लिया है और उसके विभिन्न पक्षों का भी विवेचन इकाई में आप पढ़ चुके हैं। अब हम रेडियो नाटक का मूल्यांकन करेंगे और उसके शीर्षक की उपयुक्तता पर भी विचार करेंगे।

i:frik|

'रात बीतने तक' के वाचन और विश्लेषण के बाद आप समझ गए होंगे कि इस रेडियो नाटक में गौतम बुद्ध के चचेरे भाई राजकुमार नंद और उसकी पत्नी सुन्दरी की कथा के माध्यम से बुद्ध के संदेश के लोक जीवन में प्रसार की व्यापकता का चित्रण किया है। वैराग्य के प्रसार की तेज हवा का मुकाबला कामोत्सव के आयोजन के द्वारा करने के सुंदरी के प्रयासों को इस हवा के झोंके पत्तों की तरह उड़ा ले जाते हैं। सुंदरी के रूप यौवन के राग रंग में डूबा नंद गौतम बुद्ध के द्वार पर आकर वापस लौट जाने की खबर सुनते ही मानो नींद से जाग उठता है। उनसे मिलकर क्षमा माँगने जाता है तो भिक्षु वेश में ही वापस लौटता है। उसका यह रूप देखकर सुंदरी का आत्मविश्वास डगमगा जाता है, तो भिक्षुवेशी नंद उसे भी भिक्षुओं के स्वर में स्वर मिलाने के सुझाव देता है।

ऐतिहासिक कथा पर आधारित इस नाटक की प्रासंगिकता इस बात में है कि यह स्थापित करता है कि भोग-विलास की परम उपलब्धि के बावजूद मनुष्य समाज से कट कर प्रसन्न नहीं रह सकता। समाज के लोग जिस दिशा में अग्रसर हैं उसकी अवहेलना तो की जा सकती है किंतु उसके विरुद्ध चलना सहज नहीं है जब तक कि ऐसा किसी बहुत बड़े उद्देश्य को लेकर न किया जाये जैसा कि गौतम बुद्ध ने किया है। राजसी जीवन की सुख-कामनाओं की पूर्ति मात्र को उद्देश्य बना कर लोक विरुद्ध चलना संभव नहीं है। सुन्दरी का कामोत्सव आयोजन इसलिए विफल हुआ कि वह समाज के तत्कालीन वातावरण के विपरीत था।

'kh"kd

इस रेडियो नाटक का शीर्षक 'रात बीतने तक' कितना सार्थक है इस पर विचार करते हुए हम पाते हैं कि नाटक की घटनाएँ एक रात की है। रात की शुरुआत से लेकर मध्य रात के बाद तक राजमहल के अंतःपुर की घटनाएँ बड़े उत्साह से सीधे-सीधे एक दिशा में चल रही हैं लेकिन परिस्थितियों से टकराती हुई प्रभात होने पर वे एकदम विपरीत दिशा में परिणत होती है। रात बीतते-बीतते आकस्मिक परिवर्तन होता है। कामोत्सव की रात का सवेरा दीक्षा ग्रहण में होता है। इस दृष्टि से इस नाटक का शीर्षक 'रात बीतने तक' बहुत ही सार्थक और व्यंजनात्मक है। नंद और सुंदरी के जीवन में हुआ इतना बड़ा परिवर्तन इन तीन शब्दों के शीर्षक से बहुत ही सांकेतिक और प्रतीकात्मक ढंग से व्यक्त हो जाता है।

vH;kl

2. 'रात बीतने तक' पढ़िए और उसमें से निम्नलिखित का उदाहरण पाठ में से खोजकर लिखिए–

   i) सुंदरी का अहंकार

   ....

   ....

   ....

   ii) नंद की विलासप्रियता

   ....

   ....

   ....

   iii) चंद्रिका की बौद्ध धर्म अपनाने की आकांक्षा

   ....

   ....

   ....

   iv) व्यंग्यपूर्ण भाषा

   ....

   ....

3. नंद के मन में उठे द्वंद्व और हृदय परिवर्तन को प्रस्तुत करने के लिए लेखक ने किस युक्ति का प्रयोग किया है?

....

....

....

4. 'रात बीतने तक' शीर्षक की सार्थकता बताइए?

....

....

....

....

24-11 lkjka'k

प्रस्तुत इकाई में आपने मोहन राकेश का रेडियो नाटक 'रात बीतने तक' पढ़ा। अब आप समझ गए हैं कि रेडियो नाटक मंचीय नाटक से किस तरह समान और भिन्न होता है। आपने इस नाटक के कथावस्तु और चरित्र-चित्रण के विषय में भी जानकारी प्राप्त की। साथ ही, मोहन राकेश की व्यंजना से पूर्ण किंतु सहज भाषा को पढ़ने और समझने का अवसर भी आपको मिला।

अब आप इस नाटक के विविध अंशों की सप्रसंग व्याख्या कर सकते हैं। साथ ही, इससे संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं।

24-12 'kCnkoyh

vUreZu % मन के भीतर, हृदय में

fHk{kkVu % भीख माँगना

xkgZLF; % गृहस्थ जीवन

iqutkZxj.k % हिन्दी में इसके लिए 'नवजागरण' शब्द भी प्रचलित है। पुनर्जागरण अथवा नवजागरण प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के प्रति जिज्ञासा और उसको पुनः खोजने, वर्तमान के लिए उसकी प्रासंगिकता तलाशने की प्रक्रिया है।

eukn'kk % मन की स्थिति।

izxk<+ % गाढ़ा।

24-13 cks/k iz'uksa@vH;klksa ds mÙkj

cks/k iz'u

1. i) सुन्दरी गौतम बुद्ध के संदेश में आस्था नहीं रखती। वह मानती है कि यह एक तरह का पाखंड है।

   ii) अलका को गौतम बुद्ध के संदेश में आस्था है। वह सोचती है कि जिस बात से नगर के सभी लोग सहमत है वह ढोंग नहीं हो सकती।

   iii) सुन्दरी गौतम बुद्ध के ऊपर हँसती है।

   iv) अलका को यह उचित नहीं लगता।

   v) सुन्दरी यशोधरा का अपमानपूर्ण ढंग से मज़ाक बनाती है।

   vi) अलका इससे सहमत नहीं है।

2. सुन्दरी को विश्वास है कि लोगों का हृदय गौतम के संदेश में इतना डूबा हुआ नहीं है कि वे सुन्दरी द्वारा आयोजित कामोत्सव के प्रति आकृष्ट न हों। वह सोचती है कि उसके इस प्रयास से लोग गृह त्याग का विचार छोड़ देंगे और स्वयं उसकी तरह भोग-विलास पूर्ण गृहस्थ जीवन में अनुरक्त होने लगेंगे।

3. नंद इस उत्सव में पूरी तरह अनुरक्त है। मदिरा, नृत्य, सुन्दरी की समीपता– सभी कुछ उसे जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि प्रतीत होती है। वह कहता भी है कि सब कुछ भिक्षा में दे दो एक सुन्दरी को छोड़कर।

4. नाटक की चरम परिणति पहले नंद और फिर उसकी प्रेरणा से सुन्दरी के भिक्षु बनने में होती है।

5.
   - रेडियो नाटक सुनने के लिए होता है, अन्य नाटक देखने के लिए। ज़ाहिर है कि इसमें उन सब तकनीकों का इस्तेमाल किया जाता है जो सुनने पर देखने जैसा आनंद प्रदान करे।
   - रेडियो नाटक की प्रस्तुति रेडियो स्टूडियो से होती है। अतः प्रस्तुति में तकनीकी जरूरतों की पूर्ति का ध्यान रखा जाता है।

6. गौतम बुद्ध और यशोधरा।

7. ऐतिहासिक परिवेश पर लिखा होने के बावजूद 'रात बीतने तक' पूरी तरह ऐतिहासिक तथ्यों पर केन्द्रित नाटक न होकर सांस्कृतिक चेतना का काल्पनिक नाटक है।

8. अश्वघोष की रचना 'सौन्दरनंद' का।

9. जब नंद को महसूस होता है कि उसकी अंतरात्मा उसे धिक्कार रही है।

10. क) i) नहीं, ii) नहीं, iii) हाँ, iv) हाँ,
    v) नहीं, vi) नहीं, vii) हाँ

    ख) i) हाँ, ii) हाँ, iii) नहीं, iv) नहीं,
    v) हाँ, vi) हाँ, vii) नहीं, viii) नहीं

11. जन सामान्य में गौतम बुद्ध के संदेश के प्रति आकर्षण और दीक्षा लेने की आकांक्षा तथा सुन्दरी और नंद में राजसी भोग-विलासपूर्ण जीवन की आकांक्षा।

vH;kl

1. उद्धरण की व्याख्या रेडियो नाटक पढ़ कर स्वयं करें।

2. यह अभ्यास है, छात्र नाटक को पढ़कर सही mnkgj.k खोजें।

3. लेखक ने उसका अंतर्द्वंद्व दिखाते हुए उसे यह महसूस कराने की कोशिश की है कि उसकी अंतरात्मा उस पर व्यंग्य कर रही है।

4. रात की शुरुआत कामोत्सव के आयोजन से होती है किंतु सवेरा नंद और सुंदरी द्वारा दीक्षा ग्रहण में होता है। इस तरह नाटक का शीर्षक 'रात बीतने तक' अत्यंत सार्थक है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY